सलंग अंक ४७ • मार्च-२०११ • मुल्य रु. ५-००

# श्री स्वामिनारायण

मासिक

महेसाणा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए एवं
भीमपुरा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

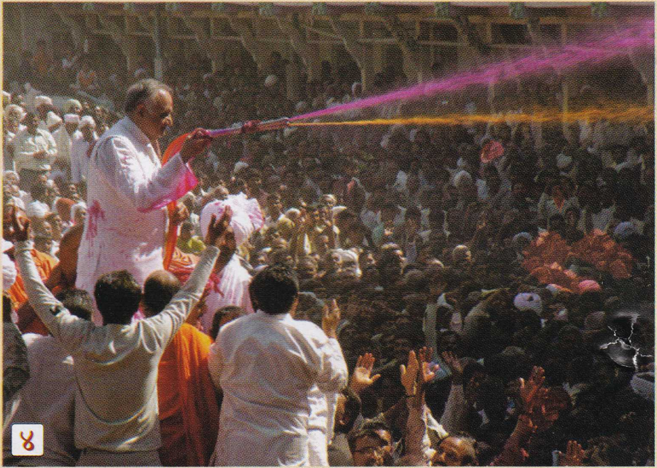

( १ ) नारायणघाट मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । ( २ ) भीमपुरा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । ( ३ ) घाटलोडिया मंदिर में श्री जनमंगल पाठ की पूर्णाहुति प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । ( ४ ) मूली मंदिर में वसंत पंचमीके उत्सव प्रसंग पर रंगोत्सव मनाते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । ( ५ ) धरियावद ( राजस्थान ) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार साथ में योगी स्वामी । ( ६ ) प्रांतिज मंदिर में गोपीनाथ स्वामी के गुणानुवाद सभा प्रसंग पर दर्शन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री एवं पू. पी.पी. स्वामी उद्‌बोधन करते हुए ।

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( महंत स्वामी )
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

**मूल्य**
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००



# श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ | अंक : ४७ | मार्च-२०११


## अ नु क्र म णि का


०१. अस्मदीयम् — ०२

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा — ०३

०३. "आरार्तिकम्" "निराजनम्" — ०४

०४. बिन खपतो नहिं कात — ०६

०५. लालच — ०७

०६. एक पहचान धर्मगुरु की (प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री) — ०८

०७. आनंद की लहर — १०

०८. सत्संग सुरभि — ११

९. सत्संग बालवाटिका — १३

१०. भक्ति सुधा — १५

११. सत्संग समाचार — १८

# अस्मदीयम

संप्रदाय के इतिहास में न भूतो न भविष्यति जैसी स्थिति वाला अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के स्पर्श वाली हजारों अलौकिक वस्तुओं का संग्रहालय श्री स्वामिनारायण म्युझियम जो प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के दिव्य संकल्प से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के मार्गदर्शन में देश विदेश के संत-हरिभक्तों के पूर्ण सहयोग से परिपूर्ण हुआ है।

जिस महोत्सव में देश विदेश के लाखो हरिभक्त श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्घाटन प्रसंग पर आकर तथा दर्शन करके जीवन को सार्थक माना। विश्व में तो म्युझियम बहुत होगा वह दर्शनीय होगा लेकिन श्री स्वामिनारायण म्युझियम तो मात्र दर्शनीय ही हैं। ऐसीवात नहीं श्री स्वामिनारायण म्युझियम तो मात्र दर्शनीय नहीं बल्कि दर्शन करने का प्रतिफल सद्य देनेवाला होगा और दर्शन करने वाला मोक्ष का अधिकारी भी होगा।

फाल्गुन शुक्ल-१५ को श्री नरनारायणदेव जयंती का फूल दोलोत्सव मनाया जायेगा। अपने संप्रदाय में उत्सव की परंपरा चालु ही रहती है। ऐसे शुभ अवसर का लाभ जो नहीं ले सके उनका सभी पुरुषार्थ व्यर्थ ही समझना चाहिये क्योंकि श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव के दिन ही श्री स्वामिनारायण म्युझियम का उद्घाटन भी है। इन दोनो अवसर को जो चूका वह सभी क्रिया से चूक गया ऐसा समझना चाहिये।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०११)

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर डुंगरी ( इडर ) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर म्युझियम उद्घाटन महोत्सव के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ यात्रा; विजय स्तंम्भ स्थापन अपने वरद हाथों से संपन्न किये। गणेश हाउसिंग प्रा.लि. थलतेज।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री घनश्यामसिंह प्रतापसिंह वाघेला के यहाँ पदार्पण, मेघाड़ीनगर।

७-८. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज कथा तथा रंगोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

करशनपुरा गाँव में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण तथा कलोल ( श्रीनगर ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा अमदाबाद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडगाँव पदार्पण।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१. एम.पी. पंड्या हाईस्कुल जेतलपुर सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर भवपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया मारुतीयज्ञ प्रसंग पर पदार्पण।

श्री जगदीशभाई आत्मारामभाई पटेल के यहाँ पदार्पण खानपुर।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

## प.पू. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया जनमंगल स्तोत्र प्रसंग पर पदार्पण।

# "आरार्तिकम्" "निराजनमं"

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

अपने भारतीय वैदिक तथा पौराणिक पूजाविधिमें आरती करना बहुत महत्व का है। महापूजा हो या यज्ञ हो, विष्णु याग, रुद्रयाग इत्यादि सभी कर्म से थोड़ा बहुत अन्तर है। परंतु किसी भी कार्य में आरती का बहुत महत्व है । भगवान के षोडशोपचार में एक आरती का भी स्थान है। इस आरती के विना पूजा का पूर्ण फल नहीं मिलता है।

संयोगवश पूजा करने का समय न हो या श्रद्धा न हो अथवा धन का अभाव हो तो मात्र आरती का संकल्प करके आरती की जाय तो पूजा का पूर्ण फल मिल जाता है।

मंत्र हीनं कीया हीनं यत्कृतं पूजनं हरे।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे ।।स्कन्द।।

पूजा में कोई क्षति रह गयी हो तो निराजन ( आरती ) करने से पूर्ति हो जाती है।

आरती में तीन या पांच बत्ती होनी चाहिये । आरती की थाली में स्वस्तिक बनाना चाहिये । उस में अक्षत, पुष्प, कपूर रखकर आरती उतारनी चाहिये । ''काकोतिर तंत्र'' में कहा गया है कि ''पञ्चनिराजनं कुर्यात्'' अर्थात् पांच तत्वों से आरती करनी चाहिये । इस में दीप अग्नि तत्व का प्रतीक है, शंख जल तत्व का प्रतीक है, धूप वायुतत्व का प्रतीक है, झालर-पुष्प पृथ्वी तत्व का प्रतीक है। झालर, घन्टीनाद, आकाश तत्व का प्रतीक है । आरती प्रगट करने के लिये माचिस का प्रयोग करना चाहिये। दीपक से दीपक प्रगट नहीं करना चाहिये । दीपक अग्नि तत्व रुप में मूर्ति स्वरुप का भोजन है। एक दीप से दूसरे दीप को प्रगट इसीलिये नहीं किया जाता है।

आरती प्रगट करके हाथ में अक्षत पुष्प लेकर हाथजोड़कर मंत्र बोलना चाहिये - ज्वालामालिन्यै नमो नमः'' अथवा ''महारत्नैश्वर्यैनिमः'' । बाद में मंत्रगान या आरती के पद बोलते हुये श्री विग्रह के दक्षिण भाग से ॐ आकार की तरह दक्षिण चरण से आरम्भ करके प्रत्येक अंग-अंग पर सात सात बार आरती फेर कर अन्त में सम्पूर्ण मूर्ति की आरती करनी चाहिये । इसके बाद जल, धूप, पुष्प, घन्टी इन से चार बार आरती उतारनी चाहिये । मूर्ति के ऊपर या अगल-बगल नहीं फेरनी चाहिये।

वैष्णवी परम्परा में आरती का मुख्य स्थान है। जिस में मंगला, श्रृंगार, राजभोग, संध्या, शयन आरती होती है। अपने हरि मंदिरों में तथा घर के मंदिर में प्रातः सायं की दोबार आरती की जाती है। दिन के प्रारंभ में तथा रात्रि के प्रारंभ में आरती अवश्य होनी चाहिये। मूर्ति का अपराधहोने से परब्रह्म का चैतन्य स्वरुपचला जाता है लेकिन आरती करने से मूर्ति में पुनः वह चैतन्य रुप प्रगट हो जाता है । इसीलिये अपने संप्रदाय में एक परम्परा है कि प.पू. आचार्य महाराजश्री जब घर या मंदिर में पधारते है तब उनके हाथों से आरती अवश्य उतारी जाती है। आरती के समय मुक्त दर्शन करने आते हैं। मलिन शक्तियों का नाश हो जाता है। घर मंदिर तुल्य हो जाता है। जहाँ आरती नहीं होती वह स्मशान गृह जैसे हो जाता है। वहाँ भूत-प्रेतादि का वास होता है। घर या मंदिर में जब आरती होती हो तब दर्शन करने अवश्य जाना चाहिये। उस आरती का दर्शन न करने से देवापराधकहा गया है। शास्त्रों में कहा गया है कि आरती का एकबार भी दर्शन करने से सात जन्म का पाप जल जाता है । उस में भी मंगला आरती का दर्शन करने से पांचो आरती के दर्शन का फल मिल जाता है । भगवान की आरती के समय दर्शन करने से पूर्ण दर्शन कहा जाता है। वाराहपुराण में लिखा है कि -

B22 – December 24, 2010 – INDIA-WEST

Culture

# Tenth Patotsav of ISSO Temple in Los Angeles Celebrated

By BHARTTI KUMAR
Special to India-West

NORWALK, Calif. — A week-long ceremony from Dec. 12-19 to commemorate the tenth Patotsav of the ISSO Shri Swaminarayan Temple-Los Angeles was organized by the International Swaminarayan Satsang Organization and blessed by H.H. Shree Tejendraprasadji Maharaj and Mota Gadiwala.

The celebrations began on the evening of Dec. 12 with a "Pothi Yatra" followed by "Deep Pragatya and Mangala Pravachan" the following day. "Maruti Yagna" was held on Dec.14.

*The procession carried out on the occasion of the tenth Patotsav of the ISSO Shri Swaminarayan Temple-Los Angeles. (Bhartti Kumar photo)*

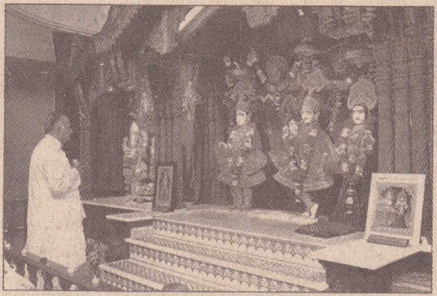

*Shree Tejendraprasadji Maharaj during one of the pujas at the temple.*

Attendance was high each day, and more so on the weekend despite heavy rain.

A "Vishnu Yagna' was also held at the temple, with "Jal Yatra" and "Shobha Yatra" continuing in the afternoon.

Most of the women wore color-coordinated purple or yellow saris while men wore red turbans. Many of them carried water in a "kalash," which was poured during the "Abhisheka" the following day.

The crowd, donning raincoats and umbrellas, participated in an hour-long procession from Cerritos College to the temple, while Acharya Maharajshri enjoyed a chariot ride under a colorful canopy.

"Kathas" were held in the evenings each day with celebrations of "Ram Janmotsav," "Krishna Janmotsav" and "Rukshmani Vivah."

During a cultural program in the evening and the following morning, everyone admired the "Purnahuti," "Abhishekam" and 212 varieties of food for the "Annakut Darshan."

Natoobhai Patel offered **India-West** a brief history of the temple.

"We had bought the land with a house in 1991. There were so many problems, like getting permits to differences of opinion amongst the donors, that by 1996 the entire work was discouraging," he noted.

"However, around that time Acharya Maharajshri gave such words of encouragement that I took it up as a personal challenge to build this temple. I took early retirement and, along with a few people, took care of legal problems and started building the foundation in 1998."

The "Pranpratishta" was held in December of 2000.

"Today, these 75 volunteers have gone beyond their responsibilities to bring the event together," Patel told **India-West**. "The heavy rainfall has not dampened their spirits, and we have well wishers from out of state also."

In his address to the gathering, Maharajshri told the devotees to keep their faith in God at all times, and though rituals may be modified, they should stick to the principles of the Bhagvadgita and other scriptures.

His wife Mota Gadiwala told the women to support the divine place in every way they can.

↑

(એલ.એ. મંદિર દશાબ્દી મહોત્સવના પ્રસંગે ત્યાંના દૈનિક પેપરમાં આવેલ ન્યુઝ)

धूपं चारार्तिकं पश्येत् कराभ्यां च वन्दते ।
कुल को हि समुद्धत्य याति विष्णोः परंपदम् ॥
दीपं स्पृष्ट्वा तु यो देवि मम कर्माणि कारयेत् ।
तस्यापराष्ट्द्वै भूमेः पापं प्राप्नोति मानवः ॥

धूप-दीप तथा आरती का दर्शन करने वाला अपने करोडो़ कुल का उद्धार करता है और विष्णु भगवान के परंपद को प्राप्त करता है । आरती का अनादर करने वाला भूमि के पाप को भोगता है । वैष्णवी नित्य पूजा प्रकाश में लिखा है कि - ''आरार्तिकमहं कूर्वे पश्य में वरदो भव'' आरती का मतलब हृदय के भाव को भगवान के पास अभिव्यक्त करना । आरती द्वारा भव बन्धन, कर्म बंधन, माया बंधन, जन्म मरण जैसे दुःखो से मुक्त होने की उपाय ।

अपने जीवन में विघ्नो का, बाधाओं का तथा अवरोधका जिससे उच्छेदन हो वह आरती है । अपने संप्रदाय में कालवाडी नामक गाँव में मुक्तानंद स्वामी को जब भगवान के लिये मनुष्यभाव आया तो रामान्द स्वामी उसी समय दिव्यरुप में आकर उन्हें उलाहना दिये, पश्चात् उन्हें यथार्थज्ञान होने पर उनके हृदय से जयसद्गुरु स्वामी की आरती प्रगट हो गयी और परिणाम स्वरुप उनका अपराधदूर हुआ और आज वही आरती गाई जाती है । उसी समय से मुक्तानंद स्वामी का प्रकाश एवं विकाश उत्तरोत्तर होने लगा ।

व्यवहार में, विवाह प्रसंग में बड़ा ब्यक्ति छोटे व्यक्ति की आऱती उतारे तो उसे दूख दूर करने की एक विधिकहते हैं । सास एवं श्वसुर अपने दामाद की आरती उतारकर उनके दुःख को दूर करके अपने ऊपर लेने की बलैया लेते हैं ।

मंदिर में आरती होती हो तो आरती पूर्ण होने के पहले निकल नहीं जाना चाहिये । अन्यथा आऱती के फल से वंचित रह जायेंगे ।

# बिन खपतो नहिं खात

– शास्त्री स्वामी अभयप्रकाशदासजी गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी ( नारायणघाट )

स.गु. प्रेमानंद स्वामी का दशवां नियम है ''बिन खपतो नहीं खात'' ।इस पर विचार किया जाय तो व्यक्ति का जीवन आहार पर निर्भर होता है । वह जैसा खाता है उसका मन वैसा बनता है । जो अन्न खाते है उसी से रक्त बनता है । वही रक्त नसों द्वारा शरीर में परिभ्रमण करता है। सबसे मुख्य स्थान मस्तक में भी रक्त का ही संचरण होता है । हम यह जानते हैं कि मस्तिष्क में रक्त का संचार बन्द हो जाय तो सभी क्रिया बन्द होजायेगी । व्यक्ति पागल हो जायेगा । भोजन की क्रिया मस्तिष्क तक पहुँच कर व्यक्ति के जीवन को संवारने का काम करती है।

जैसे मस्तिष्क चलता है वैसे ही विचार भी चलते है। जैसा विचार आता है वैसा जीवन बनता है । जैसा जीवन होता है वैसी प्रतिष्ठा होती है । इन सभी का मूल कारण आहार है । आहार शुद्ध तो विचार शुद्ध, विचार शुद्ध तो जीवन शुद्ध । इसीलिये भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के १९ वें श्लोक में लिखा है कि –

अग्राह्यान्नेन पक्वंयदन्नं तदुदकं च न।
जगन्नाथ पुरोऽन्यत्र ग्राह्यं कृष्ण प्रसाद्यपि ॥

जिसके हाथ का अन्न तथा जल ग्रहण करने लायक न हो उसके घर का पक्वान्न तथा जल भगवान श्री कृष्ण का चरणामृत भी हो तो भी जगन्नाथ पुरी को छोड़कर अन्यत्र का ग्रहण नहीं करना चाहिये । अग्राह्यं अर्थात् ऐसे घर का पका हुआ अन्न तथा जल अपने देश गाँव, ज्ञाति, कुलाचार तथा वर्णाचार के अनुसार विरुद्ध होने से भक्ष्य नहीं है, उसके घर का जल या प्रसाद भी ग्रहण योग्य नहीं है । कोई जाति में भले बड़ा हो लेकिन उसमें पवित्रता न हो तो उसके घर का अन्न नहीं खाना चाहिये । अपने संप्रदाय में जूनागढ का रामा हरिजन था । वह भगवान का भक्त था । जूनागढ में रहकर सफाई का काम करता था । मार्ग में से जब संत निकले तो दूर से नमन करता जय स्वामिनारायण कहता था । इस तरह करते रहने से संतो के योग में आने से सत्संगी हो गया । अब वह इतना नियम करने लगा की जब सफाई का काम पूरा हो जाय तो स्नानादि क्रिया करके भगवान की भजन में बैठ जाता था। एक समय की बात है जूनागढ में नागर ब्राह्मणों की रसोई थी । उस समय सभी नागर ब्राह्मण एकत्रित होकर भोजन किये । बाद में जो रसोई बची उसे रामा भक्त को देदिये और कहे कि घर लेजाकर खाना । तब रामा भक्त ने कहा हे भूदेवो ! आप सभी का अन्न हम नहीं खा सकते । यह सुनते ही सर्वत्र चर्चा का विषय बन गया । एक शूद्र ब्राह्मणों से कह रहा है कि आप का अन्न हमें स्वीकार्य नहीं है । पूछा गया क्यों ? तब उसने बताया कि आप लोग अपने रसोई बनाते समय पानी, तेल, घी, दूधइत्यादि को कपड़े से छाने नहीं । आंटा को चाले भी नहीं । अनाज व्यवस्थित साफ नहीं किये । रसोई को बनाने के बाद उसे ढंके नहीं । और मैं भगवान का भक्त हूँ । स्वामिनारायण की आज्ञानुसार आप लोग गार-छान का प्रयोग भोजन में नहीं किये इसलिये आप सभी का ग्राह्य नहीं है । विवाद राजा के पास गया । नागर ब्राह्मणों के कहने पर राजाने उस हरिजन रामा को दरबार मे बुलाया और पूछा कि तुम इन ब्राह्मणों की रसोई लेने के लिये क्यों मना किये । तब उसने कहा राजन ! ये लोग अन्न को बीने नहीं, आंटा को चाले नहीं, तेल, पानी इत्यादि को गारे नहीं तो हम इनके अन्न को कैसे ले सकते है । हम भगवान स्वामिनारायण के आश्रित है । राजाने सभी ब्राह्मणो से कहा कि अब यह रामा आप सभी का अन्न नहीं लेगा । किसी अन्य को खिला दीजिये । यद्यपि यह शूद्र जाति में पैदा हुआ है फिर भी कितनी पवित्रता है।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने गढडा प्र. १८ में वचनामृत में कहा है कि जो पंच न्द्रियों का आहार है उसे शुद्ध करके रखना, फिर उसका उपयोग करना, यह हमारी आज्ञा है।

# लालच

- शास्त्री स्वामी विश्वप्रकाशदासजी ( चेरीहील मंदिर )

मनुष्य एक सामान्य जीवन जीता था । सादा जीवन उच्च विचार, मेहनती जीवन, मोटा खाना, मोटा पहनना, गृहस्थजीवन के लिये ज्ञानी था । मात्र पुस्तकों का ज्ञान लक्ष्य नहीं था । प्रत्येक ऋतुओ का पाक, पशुपक्षि की बोल भाषा को जानता था । वह धर्म परायण था, मात्र क्रिया कांड से ही मतलब नहीं था ।

कोई विमार हो जाय तो अपनी बुद्धि से तात्कालिक उपचार भी जानता था । दीन दुःखियों के सेवा का भाव भी थी । कुटुम्ब भावना थी । एक दूसरे में सन्मान का भाव था । उनके घरों में इज्जत, विश्वास को स्थान मिलता था । उसी में वे शोभा मानते थे ।

एक दिन मानव बाहर गया । आज का दिन कैसा था ? वह रास्ते में कुछ देखा । उसका मन विचार करने लगा । उसने उस निर्जन बन में, एकान्त में जिसे देखा वह एक कन्या थी । उसे यहाँ कौन छोड़ के गया होगा ?

मानवी का मन उसकी तरफ आकर्षित हुआ । उसी समय एक पक्षी ने आवाज दिया और वन की शान्ति कम्पित हो उठी । वह मायावी सुन्दर कन्या को देखकर वह ललचाया । उसके सुनहरे बाल थे । मुस्कान से किसी को भी वश करले ऐसी थी ।

मानवने उसका स्वागत किया । उस बालाने मानव का स्वागत किया । मानव उसे घरले आया । उसने अपने यहाँ आश्रय दिया, अब मानव का मन उस बाला में, अन्य से मन उठने लगा । अन्य काम में भी मन नहीं लगता था । उसके विचार में परिवर्तन होने लगा । अब वह परिवार से कपट करने लगा ।

वह बाला स्वभाव से लोभी एवं लालची थी । घर के किसी भी सदस्य को नीचा दिखाने में उसे मजा आती थी । जिस किसी को भी अपमानित करदेती थी । अपमानित शब्दों का प्रयोग करती थी । अपने आदेश का पालन करवाती ।

इस घर की पहले परंपरा थी कि जो भी सदस्य घर में आता उसका सन्मान होता था, लेकिन जब से यह आयी आने वालों की उपेक्षा होने लगी । वातावरण कलुषित हो गया । आनेवालों की कमी होने लगी । अपने लोग अपने से ही दूर होने लगे । एकदिन वैभव मानव को राम राम कर लिया ।

वैभव ? तुम कहाँ जा रहे हो ? मानव ने पूछा ।

भगवान जाने ! अब हमारा यहाँ रहना ठीक नहीं । ऐसा कहकर वैभव वहाँ से निकल पड़ा । अब घर की स्थिति बदतर होने लगी । पशु -प्रारणी सभी दुःखी होने लगे । पशुधन एकदम खत्म हो गया । दूधतेने वाली गाय-भैंस नहीं रही । बाढ आई तो पाक भी खत्म हो गयी । मानवी के दुर्भाग्य की कोई सीमा न रही । एकदिन आबरु भी मानवी से विदाई लेली । मैं भी इस घर में नहीं रहूँगी । मेरा स्थान भी यहाँ अब नहीं रहा । लेकिन क्यों ? जरा रुक तो ? नहीं, नहीं यहाँ पर यह बाला सबकुछ खराब कर दी है । अब मैं यहाँ क्यों रहू ? आबरु भी गयी । लोग मानवी का खराब बोलने लगे । आजतक सब मानवी का अच्छा बोलते थे, अब निन्दा करने लगे ? बाला के पीछे मानवी ने बैभब तथा आबरु को खो दिया । लेकिन मानवी उस बाला को छोड़ने के लिये तैयार नहीं हुआ । वह बाला उसकी ओर भी नजदीक होती गयी ।

इतने में विश्वास आया, वह भी कहने लगा कि आप घर से बाहर करो इससे पहलेँ ही चला जाता हूँ । मानव थोड़ा विचार करने लगा और गद गद कंठ से कहने लगा ।

नहीं, नहीं, आप सभी एक-एक करके छोड़कर चलें जायेंगे तो मेरा कौन भाई ? तुम्हें हम जाने नहीं देंगे । तुझे क्यों जाने दे ? तुम मेरा प्राण है ? तूं ही मेरा सर्वस्व है । तुम्हे गुमादेंगे तो मेरे जीवन में क्या शेष रहेगा । वर्षो से तू मेरे साथ रहा है । तुम्हारे जाने से हमारा सब कुछ नष्ट होजायेगा । तूं ही मेरा सहारा है । तूंही मेरी श्वांस है ।

( पेईज नं. १२ )

# एक पहचान धर्मगुरु की
## (प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री)

- नटुभाई पटेल ( राजपुरवाला वर्तमान में केनेडा )

आज के युग में आदमी भौतिक सुख के मायाजाल में फंस गया है । तिनका पकड़कर समुद्रपार करना चाहता है। सत्य को समझ नहीं पा रहा है। नाना प्रकार के प्रयत्न करता रहता है। परिणाम शून्य ही आता है। तेली के बैल की तरह आंख में पट्टी बांधकर वहीं का वही घूम रहा है। निराशा, हताशा, उद्वेग, अशान्ति के शिवाय उसे कुछ मिलता नहीं है।

कभी विचार किया है ? ऐसा क्यों हो रहा है। यंत्रयुग में नाकामयाब तंत्र क्यों अधोगति को प्राप्त हो रहा है, इस पर कभी किसी ने विचार किया है क्या ? भले कोई इस बात को न स्वीकार करे, लेकिन यह सत्य है कि किसी विशेष कारण से ऐसा होता है । इस अशांति के लिये असाधारण आध्यात्मिकता की जरुरत है । अपने व्यवहारिक तथा सामाजिक समझ को आध्यात्मिक शक्ति से चलावें तो निश्चित ही पोषण मिलता रहेगा। वह आध्यात्मिक शक्ति क्या है ? केवल मन की दिशा को नियंत्रण में रखे तो शांति की प्राप्ति हो सकती है।

भगवान स्वामिनारायण ने सर्व शास्त्रों की साररुपा शिक्षापत्री जैसा ग्रंथ समाज को दिया है, मात्र उसका अभ्यास करने से अपने आप रास्ता मिल जायेगा।

धर्म क्या है ? ज्ञान क्या है ? भक्ति-वैराग्य क्या है ? जीव इन सभी का समन्वय करते रहे है तो मायाजाल से छूट सकता है और सच्चे सुख को प्राप्त कर सकता है। जिस तरह दबा के विना रोग नही मिटता उसी तरह शिक्षापत्री के अभ्यास के विना सुख-सान्ति नहीं मिल सकती।

भगवान के चार स्वरुप है - मूर्ति, आचार्य, संत तथा शास्त्र - इनको जानना आवश्यक है। मूर्ति में मूर्ति का भाव, आचार्य में आचार्य निष्ठा - आज्ञापालन, सन्त में सन्त समागम, तथा शास्त्र में शास्त्र का अभ्यास आवश्यक है। मूर्ति का दर्शन करने के बाद मूर्तिपना नहीं आवे, सन्तो का समागम किये, लेकिन सद्गुण नहीं आये। धर्म शास्त्र पढे लेकिन अभ्यास नहीं हुआ कारण? किसी विशेष अभ्यास की कमी होने से वह कमी है - धर्मगुरु धर्माचार्य की, धर्मगुरु के विना भगवान की मूर्ति में शीलवंत संतो के समागम में अथवा धर्म शास्त्रो के अभ्यास विना सत मार्ग में जीव जुड़ता नहीं है। जीव भटकता रहता है। माया जाल से छूट नहीं सकता। दुःख अशांति, निराशा, द्विधा, उद्वेग से वह रहित नहीं हो सकता।

इस जीव को सुखी करने के लिये सच्चे गुरु की जरुरत है। आज के युग में धर्मगुरु मिलना बड़ा कठिन है, लेकिन सरल भी है।

भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि हम इस लोक में हमारे द्वारा स्थापित आचार्य के रुप में सदा रहेंगे और सभी का सर्वविधकल्याण करता रहूँगा।

जिसके लिये स्वयं आज्ञा किये, अपनी गद्दी पर बैठाये, धर्मकुल अर्थात् धर्म के वंश में उत्पन्न होने वाले को ही आचार्य परम्परा दिये, तो उन्हें ही हम स्वीकार कर सकते हैं अन्य को नहीं । वे आचार्य कौन हैं तो धर्मकुल अर्थात् धर्म भक्ति की परम्परा में सातवें आचार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी, जिनका प्रादुर्भाव सम्वत् २०२८ विजया दशमी के दिन हुआ था। बाल्यकाल से तेजस्वी, असाधारण व्यक्तित्व, सर्वगुण सम्पन्न, दीर्घदृष्टि, अहमदाबाद के सेन्ट जेवियर्स कोलेज में अंग्रेजी माध्यम में अभ्यास किये थे।

सतसंग में वाल्यकाल से ही अपने पिताजी प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ विचरण करके दृढता प्राप्त किये थे।

लालजी महाराज के स्थान पर रहकर अगणित धर्मशाला, पाटोत्सव किये। जेतलपुर धाम जैसे अनेकों मंदिरो की पदयात्रा किये । युवा अवस्था में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना करके अपनी क्रिया शीलता के कारण नवयुवानों के मन को ही नहीं बल्कि समग्र सत्संग के विचारों को जीत लिया। वि.सं. २०६० आश्विन शुक्ल-२ ता. १५-१०-२००४ को श्री नरनारायणदेव गादी अमदावाद के पीठाधिपति आचार्य पद पर आरुढ हुये। अपने पिताजी पू. बड़े महाराजश्री के सम्पूर्ण सद्गुणों को अपने में उतारकर अपनी एक एक श्वांस स्वामिनारायण भगवान के लिये तथा सत्संग के लिये होगी ऐसी असाधारण प्रतिज्ञा करके आज सम्प्रदाय की देश-विदेश में उत्तरोत्तर वृद्धि करने के लिये विचरण कर रहे हैं।

आपके भीतर दीर्घ दृष्टि, असाधारण परोकार परायणता, कार्यदक्षता, साधन परायणता, सर्वजीवहितावह का अजोड आशीर्वाद के कारण ही गावों से लेकर शहरतक, भारत से लेकर नवखंड द्वीप तक आपके अमृतवाणी का प्रताप महक रहा है। वह चाहे उत्तर गुजरात का राजपुरा गाँव हो या अमेरिका खंड का टोरन्टो शहर हो। मात्र मानव उत्कर्ष की वात भविष्य की पीढी का संस्कार कैसे सुरक्षित रहे केवल कल्याण के लिये राग-द्वेष, अहंकार, क्रोध, ईर्ष्यां ईत्यादि का भाव सत्संगियो में न आवे इसके लिये सतत विचरण करके भगवान स्वामिनारायण के उपदेश का प्रचार कर रहे हैं। रात्रि हो या दिन अच्छा स्थान हो या खराब, गरीब हो या अमीर छोटे-बड़े का भेद भाव छोड़कर आशीर्वचन देने के लिये अवश्य जाते हैं। किसी प्रकार की अपेक्षा के बिना कीसी प्रकार की सुरक्षा के बिना, अपने दैनिक जीवन को कुटुम्ब से दूर रखकर श्रीहरि के संदेश को सजीव रहना इनके जीवन का महामंत्र है। मंदिर बनाकर उपासना बढाना, उत्सव करके शक्तिभाव बढाना इनकी आकांक्षा है। कुदरती संकटो में सरकार के साथ, जन समुदाय के साथ रहकर परोपकार के कार्य, नई पीठी के बालकों के संस्कार का रक्षण, अश्लीलता से दूर रखने का कार्य, व्यसन से मुक्ति जैसे कार्य आपके मुख्य उद्देश्य हैं।

संतो के साथ रहकर धार्मिक उत्सव करके समाज में प्रभु की तरफ जागृति हो इसके लिये कथा-पारायण करवाने का कार्य कर रहे हैं।

ऐश्वर्य तो उनके विचरण में जगह-जगह दिखाई दिया है। आपके विषय में लिखने बैठे तो समय कम हो जायेगा। साधन उपलब्धनहीं हो पायेंगे। जो भगवान के अपर स्वरुप हो उनकी स्वाभाविकता रहनी आवश्यक है। थोड़े वर्ष पूर्व परदेश की धरती की यह बात है। उत्तर अमेरिका के केनेडा देश के रमणीय सुन्दर ऐसे टोरेन्टो शहर में २००४ की साल अगस्त मही ने में सम्प्रदाय के तथा अन्य लोगों की उपस्थिति में मूर्ति प्रतिष्ठा का समय था, एक दिन पूर्व अर्थात् ९ अगस्त २००४ को मेघ लगातार वरस रहे थे। हवामान ने चेतावनी दी थी की पूरे दिन लगातार बरसात होगी। हरिभक्त दो कि.मी. जितनी लम्बी शोभायात्रा का आयोजन किये थे। पुलिस वाले भी आ गये। बरसात चालू ही थी। आयोजक निराश थे। स्वच्छ सुन्दर वस्त्र पहनकर भक्त तैयार थे। सभी ने ऐसा सोचा की शोभायात्रा बन्द करनी पड़ेगी। लेकिन भक्तों की इच्छा थी की श्रीहरि अच्छा ही करेंगे इसलिये यात्रा निकालनी ही है।

योर्क युनिवर्सिटी दरवाजे के पास सभी एकत्रित होने लगे, आचार्य महाराजश्री अपने निवास स्थान से संत हरिभक्तों के साथ ज्योंहि वहाँ पहुंचे मेघ वरसना बन्द कर दिये। गाजे बाजे के साथ यात्रा निकली यह अलौकिक चमत्कार नहीं है तो और क्या है? भगवान स्वामिनारायण का ऐश्वर्य गादीपति के भीतर अपने आप आजाता है। आवश्यकता होने पर प्रगट भी होता है।

## पीपासर में जलक्रीडा

- शा. हरिजीवनदास स्वामी (हिंमतनगर महंत(

मेथाण में घृत भोजन की लीला करके सभी को आनन्दित किये । घी का प्रसाद लेकर प्रभुने कहा काकाभाई ? आपका सभी घी हमें खाना था । लेकिन काठी सभी थक गये थे इसलिये खत्म नहीं हो पाया । ऐसा कहकर खूब हंसे । जल मंगवाकर जलपान करके श्रीहरि सभी सखाओं एवं सभी हरिभक्तों के साथ पीपासर स्नान करने पधारे ।

उसी सरोवर के दाहिनी तरफ नींब वृक्ष की छाया में उच्च आसन लगवाकर विराजमान हुये । नापित को बुलाकर हजामत करवाये । शौच विधिकर आये । नींब वृश्र के दाहिनी तरफ हाथ-पग धोये । पीपा सरोवर के किनारे खड़े सभी हरिभक्तों से कहे कि हम स्नान करने जा रहे है, यह सुनते ही सभी स्नान करने के लिये साथ हो लिये ।

# आनंद की लहर

थोड़े समय तग जलक्रीडा करते रहे । मूलजीभाई भी महाराज के साथ स्नान कर रहे थे । वे भी तालाब में डुबकी मार मारकर जलक्रीडा करने लगे । वे महाराज को ललकार कर कहे कि हे महाराज ! आप को मैं पकड़ लूंगा । परंतु महाराज ने ऐसा दाव खेल कि मूलजीभाई तालाब के किनारे फेंका गये । महाराज का ऐसा चरित्र देखकर उनके मन में महाराज के प्रति भगवान का भाव जाग उठा । वे कहने लगे आप तो पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान है ।

इस तरह आनंद-विनोद करके काकाभाई तथा पूंजाभाई के घर पधारे और वहीं पर भोजन किये ।


श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | प्रकाशन स्थल | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१ |
| २. | प्रकाशन समय | : | प्रति मास |
| ३. | मुद्रक का नाम | : | महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी |
| | राष्ट्रियता | : | हिन्दी |
| | पता | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१ |
| ४. | संपादक का नाम | : | महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी |
| | राष्ट्रियता | : | हिन्दी |
| | पता | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१ |
| ५. | मालिक | : | श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री |
| | राष्ट्रियता | : | हिन्दी |
| | पता | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१ |

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, ( प्रकाशक की साईन )

# सत्संग सुरभि

## संप्रदाय का श्रृंगार "श्रीहरि की थाल"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अहमदाबाद)

श्रीजी महाराज द्वारा प्रवर्तित श्री स्वामिनारायण संप्रदाय सभी प्रकार वैभव शाली है। संप्रदाय की गौरव समान शिक्षापत्री गागर में सागर की तरह है। इसी तरह श्रीहरिने स्वयं मुक्तानंद स्वामी द्वारा रचित ''जय सद्‌गुरु स्वामी'' इस आरती पद को संप्रदाय का अमूल्य खजाना बताया है। सिद्धि के साथ मुक्ति इतनी सुगम पहले कभी नहीं थी। आरती के साथ प्रातः सायम् थाल ( भोग ) अर्पण करते समय गीत गाया जाता है। ''जमो थाल जीवन जाऊँ वारी''.... यह गीत अपने सम्प्रदाय में अद्‌भुत बताया जाता है। इस गीत को श्रीजी महाराज स्वयं गवाते थे, उन्हें बहुत प्रिय था। मात्र स्वामिनारायण सम्प्रदाय ही नहीं परन्तु अन्यत्र भी मुक्तमन से प्रसंशित यह पद है।

आज से १७ वर्ष पूर्व रजत-सुवर्ण जयन्ती के प्रसंग पर युनिवर्सिटी ग्राउन्ड, ड्राईव इन रोड अमदावाद में श्री रमेशभाई ओझा के भागवत कथा का आयोजन किया गया था। उस समय सातो दिन प.पू. बड़े महाराजश्री जब सभा में पधारते थे तब पू. भाईजी तथा महाराजश्री आपस में मिलते अभिवादन करते बाद में सिंहासन पर बिराजमान होते।

उस समय श्वेत वस्त्र तथा लाल पगड़ी पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को धारण करके आते हुए देखकर तथा साथ में काषाय वस्त्र धारी संतो का समूह में आते देखकर रमेशभाई ओझा ने अपनी कथा में इस दिव्य स्वरुप का वर्णन किया था।

जब-जब संतो के बीच में आते हुए इस दिव्य स्वरुप को देखता हूँ तब-तब मानो पारिजात पुष्पों की शोभा तथा सुगन्धचारो तरफ फैलती हुई नजर आती है और उस आकर्षण से मन मंत्र मुग्धहो जाता है।

इसके अलांवा स्वामिनारायण संप्रदाय में प्रतिदिन भोग लगाने के समय गाया जाने वाला पद ''जमो थाल जीवन जाऊँ वारी'' यह पद भी बड़ा अद्‌भुत है। अन्यत्र कहीं इतनी सरलता मिलनी कठिन है।

श्रीजी महाराज की आज्ञा से भूमानंद स्वामी सत्संग के प्रचारार्थ गाँव में विचरण कर रहे थे। उस समय संतो को बहुत कष्ट सहन करना पड़ता था। स्वामी एक गाँव के बाहर रुके। ठन्डी का समय था। शरीर की चमड़ी कट गयी थी। खून बह रहा था। शरीर पर पूरे वस्त्र भी नहीं थे। दिन में भगवत् कथा करने जाते तो आसुरी तत्व भी परेशान करते थे। खाने-पीने के लिये व्यवस्थित नहीं मिलता था। ऐसी परिस्थिति में महाराज की मूर्ति तथा उनकी आज्ञा का पालन क्षण भरके लिये विस्मृत नहीं होता था।

एक समय तो ऐसा हुआ कि स्वामी को चार दिन तक उपवास भी करना पड़ा था। कहीं भी भोजन की व्यवस्था नहीं हो पायी। पांचवे दिन किसी सन्त से मुलाकात हुई उन्होंने गेहूँ का मिष्ठान खिलाया। स्वामी की कृशकाय देखकर उन सन्त की मनोदशा उनके प्रति दयार्द्र हो गयी।

इतना प्रसाद मिलने से स्वामी की चेतना शक्ति बढ़ गयी। उस प्रसाद को लेकर पहले वे महाराजकी मूर्ति का भोग लगाये। भोग लगाते समय अधोनिर्दिष्ट पद बोलते जाते -

''जमो थाल जीवन जाऊँ बलिहारी
धोऊँ करचरण करो त्यारी जमो,
मुखवास मनगमता लइने,
प्रसादी थाल तणी दईने,
भूमानंद कहे रात्री थईने.... जमो।''

पौष मास की शिशिर ऋतु में इतनी सुन्दर गेहूँ की हरी पाक से बनी मिठाई महाराज के सामने रखकर इस पद को गाने लगे। महाराज स्वयं प्रगट होकर स्वीकार किये। थाल में जो वस्तु रखते और वैसे पद भी बोलते, प्रभु उसे ग्रहण

करते जाते थे। अवशिष्ट प्रसाद स्वामी को भी दिये। स्वामी के दुःख को देखकर प्रभु बहुत दुःखी हुए। स्वामी को आश्वासन देकर अन्तर्ध्यान हो गये।

इसके बाद तीन चार दिन के बाद स्वामी गढपुर पहुँचे। महाराज का प्रसाद बना था। भोग लगाने का समय था। उसी समय स्वामी पधारे। स्वामी को आते देखकर महाराज स्वयं आगे बढे गले लगा लिये। नेत्रों से अश्रुकी जलधारा बहने लगी। स्वामी के दुःख का स्मरण करके महाराज गद् गद् हो उठे। स्वामी को भी महाराज का दर्शन होते ही शरीर पुलकाय मान हो गया।

भगवान और भक्त का मिलन अद्भुत था। भूमानंद स्वामी को शांत्वना दिये और स्वयं प्रसाद ग्रहण करने पधारे। साथ में स्वामी को लेकर गये और "जमो थाल जीवन जाऊँ बलिहारी" इस पदको बोलवाये। इस प्रकार इस पद में रस भर दिये आज भी वही रस प्रगट होता है।

संप्रदाय में जो भी वस्तु उच्च स्थान को प्राप्त हुई है उसमें मूलकारण आज्ञापालन है। विकट परिस्थिति में भी अपने प्रियतम भगवान को भावना पूर्वक - गद्‌गद् कंठ एवं रोमाञ्चित शरीर से परमात्मा को भोग लगाने में भक्त भूलता नहीं है। भूमानंद स्वामी का यह पद संप्रदाय में श्रृंगार बनकर सुशोभित हो रहा है।

भूमानंद स्वामी रचित थाल ही नहीं बल्कि अन्य थाल भी प्रसिद्ध है। प्रेम सखी प्रेमानंद स्वामी द्वारा रचित पद आज भी कालूपुर स्वामीनारायण मंदिर रंगमहोल घनश्याम महाराज के समक्ष बोला जाता है। नाना प्रकार के भजन ५६ प्रकार के भोग लगा कर प्रभु के समक्ष पद बोलकर शान्तरस में जिमाया जाता है।

जे जे थांईए रे, ते के जोजी अमने
कोई कसर करो तो रे, मारा सम तमने।

अन्त में पान का बीड़ा देकर निवेदन करते है। दयानन्द स्वामी द्वारा रचित रात्रि भोजन का पद "रुडी रांधी में रसियाजी, खाते खिचड़ी रे...."

खिचडी में दाल-चावल के साथ माखन का इतना सुन्दर समन्वय कर दिये कि खिचड़ी अत्यन्त मुलायम हो गयी।

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज हिंदी भाषा में जेतलपुर की थाल (पद) लिखे जो अत्यन्त मोहक है। जेराम ब्रह्मचारी द्वारा रचित (थालः पद भी अत्यन्त सुंदर है।

अपने संप्रदाय की ये सभी थाल (पद) प्रसंशनीय है सभी पद प्रभु को स्मरण करके लिखे गये हैं।

संप्रदाय के अनुपम वैभव तथा श्रृंगार के समान ये थाल (पद) भावपूर्वक गाने के योग्य है।

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

मानवी की आंख में अश्रुभर आये। विश्वास उसे अकेले छोड़कर जा नहीं सका। लेकिन उसने कहा कि थोड़े समय तक और अवसर देता हूँ, तूं सुधर जाता है तो ठीक, अन्यथा विचार करना पड़ेगा। ऐसा कहकर विश्वास रुक जाता है। मानवी आबरु के पास सन्देश भेंजा और वह भी इधर-उधर भटकने के बाद अच्छा स्थान नहीं मिला तो वापस आगयी।

मानवीने उसको सत्कार पूर्वक अपने पास रख लिया। आबरु तथा विश्वास दोनो मिलकर बैभब को समझा बुझासर वापस ले आये। बाद में खेत में अच्छी पाक भी हुई। खलिहान फसल से भर गया। वृक्ष में फल फूल आगये। गाय-भैंस दूधदेने लगी। अब मानव को लोग मान देने लगे।

बाला का अब घर में कोई स्थान नहीं रहा। इसलिये मानव के साथ झगड़ा करने लगी। यहाँ तक कि कहने लगी कि मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी। मानव ने उसकी माता माया देवी को सन्देश भेंजा कि आपकी बेटी आपत्ति में है। माया ने अपनी बेटी को चुपके से बुला लिया। मानव के घर में पुनः पहले जैसी आनन्द की लहर फैल गयी। उस बाला का नाम जानना है?

उसका नाम है लालच! इससे सभी को सावधान रहना चाहिये।

## श्री नरनारायणदेव को जय जयकार

- शा. हरिप्रियदासजी ( गांधीनगर )

श्रीजी महाराज ने कहा है कि ''अमे वारे वारे श्री नरनारायणदेवनुं मुख्यपणुं लावीए छीए तेनुं तो एज हाद छे जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधामना धामी जे श्री नरनारायण ते आ सभा मां नित्य बिराजे छे। ते सारुं मुख्यपणुं लावीए छीये अने ते सारुं अमे अमारुं रुप जाणीने लाखो रुपियानुं खर्च करीने शिखरबंधमंदिर श्री अमदावादमां करावी ने श्री नरनारायणनी मूर्तिनुं प्रथम पधरावी छे।''( जेतलपुर-५ )

परम कृपालु इष्टदेव परमात्मा स्वामिनारायण भगवान इस धरती पर प्रगट होकर अनंत जीवों का उद्धार किये। अनंत लीलायें की तथा जगत के जीवों का श्रेय करने के लिये देव, आचार्य, संत एवं शास्त्र इन चार रुपों में सदा प्रगट रहने का संकल्प किये। उसमें भी देव स्वरुप में दर्शन देने का प्रारंभ अहमदाबाद से किये।

स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा से आनंदानंद स्वामी ने अहमदाबाद में तीन शिखरवाला मंदिर बनवाया। इस मंदिर निर्माण कार्य में श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये हरिभक्त तन, मन, धन से समर्पित हो गये थे। यह श्री नरनारायणदेव का धरती पर सर्व प्रथम मंदिर बना और सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठित हुई।

स्वामिनारायण भगवानने स्वयं प्रतिष्ठा का दिन निश्चित किया, वह दिन था संवत १८७२ फाल्गुन शुक्ल-३ रविवार ता. २४-२-१८२२। प्रतिष्ठा के पूर्वदिन लाखों भक्तजन अहमदाबाद में एकत्रित हो गये। सभी कांकरिया के चारो तरफ ईमली के वन में खेतों में रुके। स्वामिनारायण भगवान भी आठ दिन पूर्व आ गये थे। प्रभु भी वहीं कांकरिया में रुके थे। जहाँ पर रुके थे

# सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

वहीं पर हनुमानजी का आज मंदिर विद्यमान है। फाल्गुन शुक्ल-३ के पवित्र अवसर पर वेदविधिपुरस्सर श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने हाथों से बांहो में भरकर मंदिर के मध्यपीठ में श्री नरनारायणदेव को तथा दक्षिण भाग में राधाकृष्ण देव को, उत्तर भाग में धर्म भक्ति माता एवं अपने स्वरुप को प्रतिष्ठित किये थे।

''नोती दीठी नोती सांभड़ी प्रगटावी,
एवी पुनीत पुरुषोत्तम प्रगटी रे ॥''

किसी की कल्पना में भी नहीं था कि भगवान स्वामिनारायण प्रथम मंदिर कहाँ बनायेंगे। प्रथम दर्शन प्रतिष्ठा कहाँ होगी यह भाव सबके मन में था। लेकिन सभी भक्तों का कल्याण करने के लिये प्रभु ने श्रीनगर ( अमदावाद ) में फाल्गुन शुक्ल-३ के दिन इतिहास बना दिया।

श्रीजी महाराज ने स्वयं तीन शिखर में प्रतिष्ठित इन मूर्तियों को हार पहनाया। चन्दन से चर्चित किया। उस समय श्री नरनारायणदेव की मूर्तियों में से तेज निकल रहा था। बाद में महाराज चौखट पर खड़े होकर मूर्तियों को देखने लगे। स्वयं श्री नरनारायणदेव की आरती उतारे। चारो तरफ जय जयकार होने लगी। श्रीहरि ने मूर्तियों में अपने तेज तथा ऐश्वर्य प्रतिष्ठित किया। बाद में सभी से कहा कि इन मूर्तियों में अखंड बिराजमान रहूँगा। श्रीजी महाराज सभी को दर्शन के लिये आज्ञा दे दिये।

कलश, ध्वजा की विधिबाकी है। इसलिये स्वामिनारायण भगवानने हरिभक्तों के सामने देखकर कहा कि तीनो शिखर पर कलश तथा ध्वज कौन

चढायेगा ? यह सुनकर पीठवडी गांव के भगो तथा मूलो पटेल ने कहा कि हम कलश चढायेगे । दादा खाचर को ध्वजा चढाने की महाराज ने आज्ञा दे दिया ।

श्री नरनारायणदेव श्रीनगर में प्रतिष्ठित हुये कि शहर की उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी । भक्तों के सुख के लिये इस प्रसंग पर वरदान दिये कि हमारे द्वारा प्रस्थापित इन नरनारायणादिक स्वरुपों की जो श्रद्धा-प्रेमपूर्वक सेवा-अर्चना करेगा उनके सभी मनोरथ पूर्ण होगें । जो भक्त प्रत्येक पूनम को तथा फाल्गुन शुक्ल-३ को यहाँ पर देव दर्शन करेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होगे, इसमें संदेह नहीं ।

स्वामिनारायण भगवान के इस वरदान को ध्यान में रखकर संप्रदाय के छोटे-बड़े सभी हरिभक्त को एक नियम अवश्य रखना चाहिये कि जो भक्त अहमदाबाद में रहते हों वे प्रतिदिन नरनारायणदेव प्रभु का दर्शन करने अवश्य आवें । दूरके भक्त प्रति पूनम को दर्शन करने आवे । विदेश में रहने वाले फाल्गुन शुक्ल-३ को अचूक आवें जो ऐसा करेंगे उनके सभी मनोरथ अवश्य पूर्ण होंगे ।

•

### सेवा करो और सुखी बनो

– साधु श्रीरंगदास ( गांधीनगर )

श्रीजी महाराज श्रम यज्ञ को प्रधानता देते थे । उनके साथ विशाल समुदाय रहता था । उन सभी को कथा वार्ता का ही महत्व नहीं समझाते बल्कि जन हितकारक कार्य भी करवाते । तालाब, वाव, मंदिर इत्यादि बंधवाते थे । इन मंदिरो के निर्माण में भक्त लोग तन से अधिक सेवा करते थे । उन दिनों पैसे बहुत नहीं थे । मंदिरों के निर्माण में ११ रुपये का भी महत्व होता था । उन दिनों भक्त-बैलगाडी, घोडा इत्यादि के द्वारा सेवा में लगे रहते।

उन दिनों तन, मन, धन जिसके पास जो होता उससे समर्पित भाव से करते थे । स्वामिनारायण भगवान मंदिर निर्माण का कार्य देखने के लिये जब पधारते तब भक्तों का श्रम देखकर बहुत प्रसन्न होते और उन्हें थकने नहीं देते ऐसा उनकी शरीर को वज्र जैसा बना दिये थे । स्वार्थ रहित भावना का यह फल था । प्रभु को प्रसन्न करने की भावना सभी के मन में थी । उन्हें अपने शरीर की या कपड़े की चिन्ता नहीं रहती थी । काम करते समय मांटी को चंदन मानते थे । ऐसे भक्तों को महाराज गले में लगा लेते थे । भक्तों के शरीर में पसीना होता और उड़ती मिट्टी उनकी शरीर में चिपक जाती थी । वसु भक्त हो गये। इसी लिये समर्पित भाव वाले भक्तों के वश में होने के कारण वासुदेव कहे जाते हैं ।

सज्जनो ! इसलिये जनमंगल स्तोत्र में शतानंद स्वामीने १०८ नामो में वासुदेव नाम को दूसरे स्थान में रखा । इसलिये अंतःकरण को पवित्र रखने के लिये सदा प्रयत्न करना चाहिये जिससे प्रभु का वहाँ निवास हो सके । स्वामिनारायम भगवान के नाम की यह महिमा है । आप भी चाहते हैं कि भगवान मुझे भाव से भेटे तो आपको भी भाव पवित्र रखना होगा । भाव से भजन करने पर ही वासना दूर होती है । फिर हृदय में वासुदेव का निवास होता है ।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com

## श्री गोवर्धन पर्वत की उत्पत्ति

- पटेल रेखाबहन अमृतलाल (लखतर)

श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धकी कथा प्रागजी पुराणी से करवाये । जिस में गोवर्धन पर्वत को प्रभु ने सात दिन तक धारण किये रहे ऐसी कथा आयी । तब नथु भट्ट ने कहा कि हे महाराज ! उस गोवर्धन का जन्म कहाँ हुआ ? उसका क्या पुण्य ? जिससे प्रभु उसे मस्तक पर धारण किये रहे । श्रीजीने कहा, गोलोक में रास मंडल को ध्यान में रखकर राधा के प्रेम के कारण मैने कहा हे राधे ! आप मुझसे कुछ मांगलो ? राधाजी ने कहा मैं आपके साथ एकांत में रास करना चाहती हूँ । भगवान श्री कृष्णने तथास्तु कह दिया । उसी समय उनके वक्षः स्थल से एक तेज निकला वह तेज जल, तृण, पर्वत के रुप में प्रगट हुआ और रास भूमि में आकर गिरा । यह कैसा तो रत्न, धातुमय, झरना, कर्दम, अशोक, इत्यादि अनेक वृक्षों से समन्वित हजारो योजन विस्तार वाला वह गोवर्धन नामवाला पर्वत था । उसी पर्वत पर रास लीला किये थे । जब भगवान धरती पर आने वाले थे उस समय राधाजी से कहे कि आप पहले धरती पर चलिये । तब उन्होंने कहा हमें वृन्दावन, यमुनानदी, गोवर्धन पर्वत गोप, गोपियां, गायें, इनके विना अच्छा नहीं लगेगा । बाद में गोलोक में से चौरासी गाँव जितनी भूमि व्रज में भेंजे गोवर्धन, यमुना को पृथ्वी के साथ जाने की आज्ञा किये । भरत खंड से पश्चिम दिशा में शालमली नामक द्वीप है । उसके बीच में गोवर्धन पर्वत द्रोणाचल की स्त्री से उत्पन्न हुआ । सभी देवता उसकी पूजा करने आये । गोवर्धन का नाम गिरिवर, गिरिराज हुआ । एक समय पुलस्त्य मुनि गोवर्धन के पास गये । उसको देखकर उनके मन में हुआ कि यह तो सभी को मुक्ति देने वाला है । उसे अपने साथ लेजाने के विचार से द्रोणाचल के पास जाकर गोवर्धन को मांगा । पुलस्य की वात सुनकर द्रोणाचल रोने लगे । पुत्रवात्सल्य के कारण कहने लगे कि हे मुनि ! यह पुत्र मेरा बड़ा प्रिय है । इसलिये पुत्र स्नेह से आकुल हूँ । लेकिन आप के भय के कारण आपको दे रहा हूँ । यह सुनकर उसने मुनि से कहा हे मुनि ! मेरा पिस्तार कई योजन का है आप हमें कैसे ले जायेंगे । तब मुनिने कहा, तूं मेरी गदोरी में ( हथेली में ) बैठजा । गोवर्धन ने कहा हमें आप जहाँ रख देंगे वहाँ से पुनः मैं हटूंगा नहीं । मुनि गोवर्धन को लेकर चल दिये । वे व्रज मंडल में आये । गोवर्धन को हुआ कि यहीं पर भगवान कृष्ण का अवतार होगा । यहीं पर उनकी लीला होगी, इससे आगे जाना ठीक नहीं ऐसा विचार कर मुनि के हाथ में स्थिति गोवर्धन अपना भार बढाने लगा । मुनि थक गये और उसे वहीं पर रख दिये । उसे रखकर लधुशंका करने गये ? पुनः ) आकर उठाने लगे वह उठा नहीं । उसे श्राप दिये कि तूं प्रतिदिन एकतिल प्रमाण से घटता रहेगा । वे वहाँ से काशी चले गये । हे नथु भट्ट ! उस गोवर्धन को भगवान सभी की रक्षा के लिये धारण किये थे । इससे इन्द्र का गर्व चला गया । उसी समय से अन्नकूट होता है ।

# भक्ति सुधा

•

## वाह जोधा वाह तूं सच्चा व्रजवासी गोप

- कंचनबहन बाबूभाई पटेल (रतनपर)

एक समय जोधा छाछ बना रहा था । बगल में महाराज उसकी परीक्षा के लिये खड़े थे । ओधा मथानी जब चलाता कहीं इधर उधर दृष्टि महाराज उसकी कराते और स्वयं मथानी की डोरी उतार देते । इस तरह अनेकों वार करते रहे । एक बार वह देख लिया और कहा कि यह आप का काम है । आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ? आप का मक्खन से हाथ खराब हो गया है ब्रह्मचारी ने देखा तो कहा कि योधा ने यह सब किया होगा । महाराज हंसने लगे । जिसकी महिमा शेष भी नहीं जान सकते ऐसे महाप्रभु जोधा के साथ माखन मन्थन लीला कर रहे हैं । कितना भाग्यशाली है जोधा ।

क्यों जोधा कहाँ जा रहे हो ? कहीं नहीं प्रभु ! भैंस चराने जा रहा हूँ । हमें तो घर परिवार से अलग होकर भैंस चराने जाता हूँ तो आपकी ही याद करता रहता हूँ । इस प्रकार की त्यागवृत्तिवाली वाणी सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे जोधा तूँ सच्चा व्रजवासी गोप है । इसमें

क्या महाराज ! आपका यह जोधा तो आपकी भजन करने आया है । भोजन तथा जगत के सभी पदार्थ आप में देखता हूँ । आपकी भजन ही भोजन है । आपकी चरण सेवा ही रोटी है । जब तक आप का दर्शन नहीं होता मेरा सब काम अधूरा ।

●

### प्रांतिज की नवलबा

– पटेल पलक जीतेन्द्रभाई (सोजावाला)

दंढाव्य देश में श्रीहरि को पदार्पण कराने की वात चल रही थी । संयोग वश श्रीहरि स्वयं उत्कंठेश्वर महादेव का दर्शन करके जयराम ब्रह्मचारी के पूर्वाश्रम के गाँव प्रांतिज में पधारे ।

प्रांतिज में एक वणिक भक्ता नवलबहन थी । श्रीहरि की अनन्य भक्ता थी । उनका पति पूर्वजन्म का आसुरी प्रवृत्तिवाला था । इससे वह पत्नी की कंठी तोड़ दिया । व्रत उपवास के लिये मना कर दिया । मंदिर दर्शन के लिये मना कर दिया । स्वामिनारायण भगवान प्रांतिज गाँव में पधारे हैं । ऐसा समाचार सुनकर नवलबा आनंदित हो गयी । वे अपने पति से दर्शन की आज्ञा मांगी । वह आसुरी जीव था इसलिये तुरंत मना कर दिया । इतना ही नहीं एकरुम में बन्द भी कर दिया । और कहा कि जब तक स्वामिनाराय प्रांतिज में है तब तक तुझे बाहर आने नहीं दूंगा । इस तरह नवलबा १५ दिन तक भूखे-प्यासे उसी रुम में बन्द रहीं । अशक्त हो गयी ।

एकदिन श्रीहरि का स्मरण करके खिड़की को खींची तो वह खिड़की बाहर आगयी, वह वहाँ से बाहर निकल गयी । वह महाराज के पास चल दीं । महाराज उस समय काशीराम भाई के घर रुके हुए थे । श्रीहरि उस समय सो रहे थे। पार्षद पहरा दे रहे थे । उस समय बा ने कहा कि हम महाराज के दर्शन के लिये आयी हैं । पार्षदों ने कहा प्रातः दर्शन करने आना । वे पार्षदों से निवेदन करने लगी ।

दोनों की आवाज सुनकर महाराज बाहर आगये, वह महिला महाराज को देखकर खूब प्रसन्न हो गयी । अपने को भाग्यशाली मानने लगी ।

श्रीहरि ने नवल से पूछा कि ठीकतो है न ! नहीं मेरा पति आशुरी जीव है, इसलिये सुख कहाँ ? मैं आपके पास आई हूँ मुझे आप अपने धाम में लेजाइये । मैं वापस जाऊँगी तो मेरा पति मुझे मार डालेगा । मुझे १५ दिन से विना-भोजन पानी के रुम में बन्द कर रखा था । मै भाग के आई हूँ।

आप घर जाइये और घर के भीतर जाकर जोर से चिल्लाईयेगा और कहियेगा कि आपको चोर मारने आये थे लेकिन हमारे भगवानने आपकी रक्षा के लिये हमारी खिड़की तोड़कर मुझे बाहर किये है । चोर सभी भाग गये। यदि ऐसा न होता तो क्या होता ?

यह वात जब अपने पति से कहीं तो वह लालटेन जलाकर रुम की खिड़की देखने गया तो सही में खिड़की टूटी हुई थी । अव वह बहुत नम्र हो गया । प्रभु की कृपा उस पर वरस पड़ी । अव वह सत्संगी हो गया । श्रीहरि के पास जाकर कंठी बंधवा लिया । इस तरह यह नास्तिक जीव भी भगवान का आश्रित हो गया ।

●

### भगवान के चरण में शान्ति

– रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हिंमतनगर में मारुति यज्ञ में आशीर्वचन देते हुये कहे कि जिस तरह शाग के वधार में हल्दी, मरचा, नमक डालते हैं उसी तरह भगवान ने जब मनुष्य बनाया तो मनुष्य के भीतर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन्द्रिय इत्यादि को बनाया । लेकिन शांति को अपने चरण में दबा लिया । लक्ष्मीजी ने पूछा यह क्यों ? तब प्रभु ने कहा कि यह हमारे चरण में है ।

व.ग.अ. ३९ में भगवानने बताया कि भगवान के चरण रज को पाने के लिये ब्रह्मा, शिव, लक्ष्मीजी, राधाजी, नारदजी, शुक, सनकादिक तरसते रहते हैं ।

जिस धर्मकुल की महिमा का गान ब्रह्मानंद स्वामीने किया है और कहा कि यदि मै इस धर्म कुल का आश्रय छोड़कर अन्यत्र जाऊँ तो मेरा कलंकित कुल कहा जायेगा । लिखा भी है –

"धर्मकुल तजी के दुजे को जो शरनी लई हूँ जाई के,
तो में नीच खरो, साची निश्चि वात कहुं सम खई के ॥
जानेवात खरी, जो में धर्म निमित्ते जाउ परी ।
तो जननी मेरी युं ही भार भरी.... धर्मकुल ॥"

एकबार पांच सात युवान साइकल लेकर भुज जा रहे थे । बीच में भचाउ गाँव के एक भक्त के यहाँ रात्रि निवास किये । वे भक्त महा मुक्त थे । वे उन आगुन्तकों की खूब सेवा किये । भोजन कराते हुये उन्होंने पूछा कि आप लोग साइकल से यात्रा क्यों कर रहे हैं ? उन सभी ने कहा कल्याण के लिये ।

गोपालानंद स्वामी ने कुछ भक्तों से कहा कि तीर्थ करने में वह शांति नहीं है लेकिन भगवान कें चरण में परम शांति है।

तीर्थो जवुं ते सत्संगी काम, ज्यारे मले सदगुरु जेह ठाम ।
त्यारे थया तीरथ सर्वे पूरा, ज्ञानी जनो तो गणे अधूरा ।
चिंतामणी नी तई प्राप्ति जेने बदामनी गर्ज रहे न तेने ।
जेने मळे सद्गुरुनी समर्थ कल्याणना साधन सर्व व्यर्थ ॥

कल्याण के लिये निष्ठा की जरूरत होती है ।

परम चैतन्यानन्द स्वामीने पूछा कि हे महाराज । जिन्हे पूर्ण निश्चय न हुआ हो वे कैसे होते हैं । श्रीजी महाराजने कहा कि जेने परिपक्वनिश्चय होय तेने तो मनमां एम रहे जे मारे सर्वे प्राप्ति थई रहे छे । पोताना हृदयमां अति आनंद वर्ते । एवी रीते जेना अंतरमां वर्ततु होय तेने परिपक्वनिश्चय जाणे। ( ग.प्र. ६३ )

ढेली नियम ने कामन करवुं ।
मर लाभ होय जो लाखनो ।
तोय ललचावीए नहि लेश मनने ।
जाणीए मुवानो काखनो ॥

ये सभी विना निष्ठा के संभव ही नहीं । जिसे परिपक्व निष्ठा हो गयी हो वह निश्चय ही अपने इष्टदेव को प्राप्त कर सकता है । अन्यथा व्यर्थ प्रयाश करता है।

शिक्षापत्री २०९ श्लोक में प्रभु ने कहा है कि मेरी वाणी मेरा स्वरुप है । इसलिये स्वरुप निष्ठा को ही धर्म वताकर निष्ठा का सुन्दर समन्वय किया है।

•

## दिन में से दीवान

- सां.यो. कंचनबा (मेडा)

हे भक्तों ! प्रथम के ५८ वे वचनामृत में महाराजने कहा है कि "मोटा पुरुषनो राजीपो थयो होय तो परंक होय तो राजा थाय अने गमे तेवा भूंडा प्रारब्धहोय तो रुडा थाय" । एक प्रसंग जूनागढ में दामोदर कुंड के पास मुस्लिम महिला का है । वह लकड़ी का व्यापार करती थी । व्यापार चलता नहीं था । कई दिन उपवास हो गया । उसी बीच गुणातीतानंद स्वामी संतो के साथ नारायण के धर स्नान करने आये । स्नानके बाद उन्हें ठन्ढी लग गयी । संत लकड़ी एकड्डा करके अग्नि प्रज्वलित करने लगे । उसी समय उस महिला को खबर पड़ी कि संत को ठन्ढी लग गयी है और लकड़ी की जरुरत है इस लिये अपने बेटेके साथ लकड़ी लेकर वहाँ पहुंच गयी । उस अग्नि के ताप से स्वामी की ठन्ढी चली गयी । स्वामी की आंख खुली तो एक मुस्लिम बालक को भी वहाँ देखकर पूछे कि यह कौन है तो सभी ने कहा कि यह मुस्लिम बालक है इसने लकड़ी लाकर दिया है जिससे आपकी ठंढी दूर हुई है । यह बहुत गरीब है । स्वामीने उसका नाम पूछा, उसने अपना नाम बावला बताया । स्वामीने उसकी गरीबी की स्थिति जानकर उसे आशीर्वाद दिया कि आज से तुम्हारी गरीबी दूर हो जायेगी । और सभी प्रकार कल्याण हो जायेगा । उसकी बहन लाडली बुन थी । संयोग वश जूनागढ के नवाब का बेटा वहीं से निकल रहा था । उसकी बहन झोपड़ी में झाडू लगा रही थी । संत के आशीर्वाद के प्रताप से वह नवाब का बेटा उसे देखा और विवाह करने की बात की । सभी को साथ लेकर दरबार में ले आया और लाडली बुन के साथ विवाह करके उसके भाई बावला को पढाकर दीवान बना दिया । इतनी बड़ी सत्ता तथा व्यवस्था मिलने के बाद भी वह स्वामी को भूला नहीं था । उनके प्रताप से इस स्थान को प्राप्त किया है, यह भाव उसके मन में रहता था । इसलिये स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन के लिये यदा कदा जाया करता था ।

हे भक्तों ! साधन-व्यवस्था में समय लगता है लेकिन महापुरुष की कृपा हो जाय तो उन्नति होने में समय नहीं लगता । महापुरुषों के साथ आत्मबुद्धि लगायी जाय तो बेड़ा पार हो जायेगा । अक्षरधामकी प्राप्ति हो सकती है।

# सत्संग समाचार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट का १५ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न**

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट श्री घनश्याम महाराज तथा श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज का १५ वाँ पाटोत्सव माघ वद-५ ता. २२-२-२०११ को धूमधाम से मनाया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों अभिषेक संपन्न हुआ था। बाद में अन्नकूट की आरती की गयी थी। सभा में स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे पी.पी.) ने पुष्पहार पहनाकर स्वागत पूजन किया था। यजमान परिवार नारायणदास कानदास पटेल परसोत्तमभाई, डॉ. गोरधनभाई, सोमाभाई, डाह्याभाई इत्यादि जनोंने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी, स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, इत्यादि संतोने प्रासंगिक सभा में उद्बोधन किया था। ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी इत्यादि संत पधारे थे। अंत में समस्त सभाजनो को पूज्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

- शा. अभयप्रकासदासजी

**धरियावद (राज.) मंदिर का छठ्ठा पाटोत्सव संपन्न**

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव श्री स्वामिनारायण भगवान तथा शिवजी परिवार, श्री हनुमानजी महाराज का छठ्ठा पाटोत्सव ता. १३-२-११ से ता. १५-२-११ तक धूमधाम से मनाया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से ब्रह्मचारी रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से रमेशभाई पटेल की माताजी के स्मरणार्थ त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा युवान वक्ता जेतलपुर के भक्तिनन्दन स्वामी द्वारा की गयी थी। इस प्रसंग पर १४-२-११ को जलयात्रा-शोभायात्रा निकाली गयी थी। ता. १५-२-११ को प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों अभिषेक किया गया था। श्रृंगार आरती के बाद पूर्णाहुति की आरती पू. महाराजश्रीने उतारी थी। बाद में यजमान परिवार ने सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर जेतलपुर से स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, विश्वप्रकाशदाजी, ब्र. पूर्णानंदजी कांकरिया के महंत स्वामी, मथुरा के महंत स्वामी, मूली के महंत स्वामी के शिष्य योगी स्वामी एवं नारायणमुनि स्वामीने प्रसंगोचित प्रवचन किंया था। श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये वहाँ के हरिभक्तों ने १२०००० जितनी सेवा की थी। यहाँ के मंदिर में धर्मशाला के लिये महेशभाई भावसारने एक रुम की तथा यजमान परिवारने ३ रुम बनाने की उद्घोषणा की थी। पुजारी नटु भगतने पू. महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। बाद में पू. महाराजश्रीने हिन्दी में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। महाप्रसाद लेकर सभी धन्य हो गये थे। छपैया के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम संपन्न हुआ था। सभा संचालन ब्र. स्वामी माधवानंदजीने किया था।

- साधु विश्वप्रकाशदासजी जेतलपुरधाम

**घाटलोडिया श्री स्वामिनारायण मंदिर**

यहाँ के हरि मंदिर में श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के सत्संग में खूब वृद्धि हुई है। गत १६ जनवरी को यहाँ मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। उस समय वहाँ के हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में प्रति दिन ११ जनमंगल पाठ करने का शुभ संकल्प की बात की तो पू. बड़े महाराजश्री यह सुनकर खूब प्रसन्न होकर सभी को आशीर्वाद दिये। एक वर्ष पूर्ण होते ही पू. महाराजश्री घाटलोडिया के मंदिर में पधारे थे। मंदिर में आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे। एक वर्ष के भीतर उस विस्तार के भक्तों ने जो धन राशी एकत्रित की थी उसमें २,७५,००० रुपये का चेक श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिए प.पू. बड़े

महाराजश्री को अर्पण किया था । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, पपू. लालजी महाराजश्री पधारकर भक्तों को आशीर्वाद दिये थे ।

– प्रविणभाई टी. पटेल

**श्रीप्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा नूतन मंदिर महामहोत्सव सम्पन्न**

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा जमीयतपुरा में प्रस्थापित कुल देवता श्री प्रभा हनुमानजी महाराज सत्संगियो के नाना विधदुःख दूर करके सुख प्रदान कर रहे हैं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं भावि आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी विजयप्रकाशदासजी एवं संप्रदाय के युवान सुप्रसिद्ध कथाकार स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रीप्रभा हनुमानजी महाराज के मंदिर का कलात्मक ढंग से नूतन मंदिर का निर्माण होते ही ता. १७-१-११ से ता. २५-१-११ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन ता. २६-२-११ से ३०-१-११ तक श्रीमद् भागवत पन्चाह्न पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. पी.पी. स्वामी ( जेतलपुरधाम ) के वक्ता पद पर कथा का रसपान हुआ था । ता. २८-१-११ से ता. ३०-१-११ तक मारुति यज्ञ, कलश एवं ध्वजा का पूजन किया गया था । २८-१-११ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । स्वा. घनश्यामदासजीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये सेवा करने पर बल दिया था । ता. १९-१-११ को भावि आचार्य लालजी महाराजश्री पधारे थे । आपके हाथों हनुमानजी का अभिषेक किया गया था । ३०-१-११ को पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । आपके स्वागत में संत हरिभक्त खड़े ही रहे । प.पू. महाराजश्रीने श्री हनुमान दादा का अभिषेक किया और यज्ञ की पूर्णाहुति करके अन्नकूट की आरती उतारकर व्यासासन की आरती उतारे थे । प्रासंगिक सभा में संतो ने प्रवचन किया था । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । बाद में सभी भोजन का प्रसाद लेकर विसर्जित हुए थे ।

इस प्रसंग पर स्वा. जगतप्रकाशदासजी तथा स्वा. आत्मप्रकाशदासजी का शिष्य मंडल सेवा में लगा रहा । अन्य संत भी सेवा में लगे रहे ।

– शा. भक्तिनंदनदासजी जेतलपुरधाम

**प्रांतिज मंदिर में स.गु. गोपीनाथ स्वामी की गुणानुवाद सभा**

यहाँ के मंदिर में ता. २२-२-११ को अ.नि.स.गु. गवैया स्वामी केशवजीवनदास के शिष्य गोपीनाथदासजी ता. ८-२-११ वसंत पंचमी के दिन अक्षरनिवासी हुये जिसके उपलक्ष्य में सभा का आयोजन किया गया था । जिस में प.पू. महाराजश्री पधारे हुए थे । जेतलपुरधाम से पू. पी.पी. स्वामी तथा अन्यत्र से संत पधारे हुए थे । प.पू. बड़े महाराजश्री ने गवैया स्वामी को तथा उनके शिष्य मंडल को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अन्त में सभी को भोजन करवाया गया था । बड़ी संख्या में संत-हरिभक्त उपस्थित थे ।

– को. हरिभाई मोदी

**जेतलपुर एम.पी. पण्ड्या हाईस्कुल में अमृत महोत्सव संपन्न**

जेतलपुर के एम.पी. पंड्या हाईस्कुल में १८-२-११ माघ शुक्ल पूनम को अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथो ''स्मरणाज्जलि'' पुस्तक का विमोचन किया गया था । जिस में स्कूल के ट्रस्टी, अध्यापक, आचार्य, गाँव के भक्त, विद्यार्थीगण तथा जेतलपुरधाम के महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी, स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, शा.स्वा. भक्तिनन्ददासजी उपस्थित थे ।

ता. २१-२-११ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सर्वप्रथम ठाकुरजी का दर्शन करके एम.पी. पंड्या हाईस्कुल पधारे थे । अमृत महोत्सव की समापन विधिअपने वरद् हाथों से किये थे । स्कूल स्टाफ, विद्यार्थीगण, भक्तजन सभी पू. महाराजश्री का दर्शन करके धन्य हो गये थे ।

– महंतश्री के.पी. स्वामी, जेतलपुरधाम

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल (बुझर्ग) २ दूसरा पाटोत्सव संपन्न**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा

से अ.नि. परसोत्तमदास परिवार, गोरधनभाई, अशोकभाई, कमलेशभाई के यजमान पद पर यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव माघ शुक्ल-१४ को धूमधाम से मनाया गया था।

प्रातः ठाकुरजी का षोडशोपचार विधिसे पूजन करके ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था। बाद में आरती हुई थी। प्रथम स्वागत गीत, नृत्य तथा सत्संग को प्रेरणादेने वाले नाटक खेले गये थे। सभा में जेतलपुरधाम के स्वा. भक्तिनंदनदासजी गढपुर के भगवतप्रसाददासजी अहमदाबाद के आनंद स्वामी, नीलकंठ स्वामी, जेतलपुर पाठशाला के विद्यार्थी संत पधारे थे। उपरोक्त सभी का पूजन अर्चन भक्तों ने किया था। संतो ने कथा प्रवचन का लाभ दिया था। अन्नकूट की आरती उतारी गयी थी। बाद में सभी ने महाप्रसाद लिया था। सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन रखागया था। समग्र प्रसंग का दर्शन करके भक्त भाव विभोर हो गये थे। – स्वा. विश्वप्रकाशदासजी जेतलपुर

**आकरुंद (ता. बायड)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आकरुंद गाँव में भव्य द्वितीय शाकोत्सव तथा नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर की खात विधिका आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आकरुंद द्वारा किया गया था। समग्र उत्सव की व्यवस्था तथा मार्गदर्शन स्वा. अखिलेश्वरदासजीने किया था।

ता. ९-२-११ को पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन मंदिर का खात मुहूर्त किया गया था। शाकोत्सव का वघार करके प.पू. बड़े महाराजश्रीने वातावरण को दिव्य बना दिया था।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन यजमान श्री पटेल नरेन्द्रभाई ने किया था।

प्रासंगिक सभा में स्वा. अखिलेश्वरदासजी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा संदेश समाचार पत्र के संपादक श्री देवेन्द्रभाई पटेलने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया था।

इस प्रसंग पर स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा), शा. सुखनंदनदासजी, स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा नरनारायण युवक मंडल के प्रत्येक सदस्य मनुभाई पटेल, प्रेमजीभाई, ईश्वरभाई इत्यादि संत हरिभक्तो ने खूब सुन्दर सेवा की थी। प.पू. बड़े महाराजश्री के भोजन की व्यवस्था नरेन्द्र भगत ने की थी। खात मुहूर्त में ही २५ लाख रुपये की भेंट मिली थी। श्री नरनारायण युवक मंडल ने २५०००-०० रुपये की भेंट श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये दी थी। प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा सब पर वरस रही है। शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीके मार्गदर्शन से यहाँ कार्यसम्पन्न हो रहा है। – श्री नरनारायण युवक मंडल आकरुंद

**श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर का १३ वाँ वार्षिक उत्सव श्री जसुभाई परसोत्तमदास पटेल के यजमानपद पर सम्पन्न हुआ था। स्वा. अखिलेश्वरदासजी के मार्गदर्शन में अभिषेक, महापूजा, अन्नकूट तथा सभा सम्पन्न हुई थी। इस प्रसंग पर उनके शिष्य विश्वेश्वरदासजी, पा. नरेन्द्र भगत इत्यादि लोगो ने सेवा का कार्य किया था। गाँव के छोटे बड़े सभी भक्तों की सेवा सराहनीय थी। १४ वें पाटोत्सव के यजमान की घोषणा की गयी थी। अन्त में यजमान परिवार की तरफ से भोजन की व्यवस्था की गयी थी।

यहाँ के मंदिर में ता. १७-१-११ सोमवार को स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से शाकोत्सव संपन्न हुआ था। इस प्रसंग पर अखिलेश्वर स्वा. तथा प्रांतिज के महंत स्वामीने सभा को संबोधित किया था। गाँव के हरिभक्तों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया था। – पा. नरेन्द्र भगत

**मोडासा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में स्वा. अखिलेश्वरदासजीने सम्पूर्ण धनुर्मास में कथा का लाभ दिया था। ता. ९-१-११ को भव्य शाकोत्सव किया गया था। जिसमें सुखनन्दन स्वा. तथा नरेन्द्र भगत व्यवस्था में लगे रहे। गाँव के सभी भक्त शाकोत्सव में सेवा किये थे। – पार्षद नरेन्द्र भगत

**श्री स्वामिनारायण मंदिर मेउ में शाकोत्सव संपन्न**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से मेउ गांव में ता. २२-१-११ को भव्य शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ था।

सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा के बाद में ठाकुरजी की आरती एवं शाकोत्सव के बाद सभा का आयोजन किया गया था। सभा संचालन स्वा. अखिलेश्वरदासजीने किया था। सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वा. जेतलपुर के महंत स्वा. माणसा मंदिर के महंत स्वामीने प्रासंगिक प्रवचन किया था। अन्यत्र से भी संत महंत पधारे हुये थे। शाकोत्सव के मुख्य यजमानश्री अभेसिंहजी जीवणजी चावडा तथा पू. महाराजश्री के पूजन के यजमान रामाजी वरवाजी चावडाने लाभ लिया था। गाँव के भक्तों ने सेवा का कार्य संभाला था। इस प्रसंग पर महंत स्वा. धर्मस्वरुपदासजी सुखनंदन स्वामी, विश्वप्रकाश स्वामी, बालस्वरुप स्वामी इत्यादि संत व्यवस्था में लगे रहे। गांव की तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये १०० डिब्बे तेल की सेवा की गयी थी। अंत में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। शाकोत्सव प्रसाद लेकर सभी विसर्जित हुये थे। – पार्षद नरेन्द्र भगत

**श्री सहजानंद आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज का गौरव**

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी केलवणी ट्रस्ट संचालित श्री सहजानंद आर्टस कोमर्स में प्रो. ए.आर. दलाल जो अभी कार्यवाहक आचार्य का भार संभाले हुए है, उनको भारतीय विद्याभवन संचालित एच.वी. कोम्युनिकेशन एन्ड मेनेजमेन्ट द्वारा सन्मानित करके शिल्ड अर्पण किया गया था। प्रो. दलाल इस संस्था में करीब ४ वर्ष से वीजीटींग लेक्चरर के रुप में सेवा कर रहे हैं।

उपरोक्त संस्था में १९७५ में श्री कनुभाई टेलर अभ्यास कर रहे थे, वे दोनो पैर से विगलांग हैं। वे दुःख तथा गरीबी जन्म से देखे हैं। परंतु अपनी संस्था में से उच्च शिक्षण प्राप्त करके तथा संस्कार प्राप्त करके समाज उत्थान एवं विकलांगो की संस्था में सेवा कर रहे हैं। इसके साथ ही मानव समाज के लिये भी सेवा कर रहे हैं। उनकी इस सेवा से प्रसन्न होकर मा. मुख्यमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी ने उन्हें पदमश्री एवोर्ड से सन्मानित किया है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री तथा बड़े महाराजश्री दोनो एवोर्ड विजेताओं को आशीर्वाद प्रेषित किये है।

**श्री स्वामिनारायण मंदिर शहेरा**

समग्र धर्मकुल के सुभ आशीर्वाद से शहेरा गाँव में सीताराम परिवार के यजमान पद पर श्री हनुमान चालीसा कथा का त्रिदिनात्मक सुंदर आयोजन श्री स्वामिनारायण मंदिर के स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर किया गया था। अनेक श्रोताओं ने इसका लाभ लिया था। श्री नरनारायण युवकमंडल की सेवा सराहनीय थी।

– सीताराम परिवार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में वसंत पंचमी को ठाकुरजी का पंचामृत से अभिषेक, शिक्षापत्री पाठ, कथा वार्ता, ठाकुरजी की नगर यात्रा का आयौजन किया गया था। हरिभक्त बड़ी संख्या में भाग लिये थे। – रमेश भगत

**श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. विश्वस्वरुपदाजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का दूसरा पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ था। जिसके यजमान डॉ. जयरामभाई जे. त्रिवेदी थे। प्रासंगिक सभा में संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। पुजारी लालभाई एवं श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

– हिरेन भगत

**श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का ६ ठ्ठा पाटोत्सव मार्गशीर्ष शुक्ल-६ को पू. ध्यानी स्वामी के संत मंडल द्वारा श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव किया गया था। हरि कथा का एवं पाटोत्सव दर्शन का लाभ लेकर दन्य हो गये थे। पाटोत्सव के यजमान जसुभाई मंगलभाई थे। बहनोने अन्नकूट की सेवा की थी। भाईयों ने संतो का पूजन अर्चन किया था। – को. विष्णुभाई पटेल, नांदोल

**महुन्द्रा में शाकोत्सव**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष के उपलक्ष्य में गांधीनगर जिले के महुन्द्रा गाँव में स्वा. हरिजीवनदासजी के मार्गदर्शन में शाकोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया था।

इस प्रसंग पर नांदो, सलकी, वर्धाना, मुवाडा, धरमपुर, दोलाराणा, वासणा, सादरा, ईशनपुर, गांधीनगर धणप, लवारपुर, हिंमतनगर इत्यादि गाँवो के हरिभक्त लाभ लिये थे। स्वा. रघुवीचरणदासजी तथा स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने सत्संग की महिमा समझायी थी। स्वा. हरिजीवनदासजीने श्री घनश्याम महाराज के चमत्कार पर प्रकाश डालते हुये शाकोत्सव की महिमा पर प्रकाश डाला था। इडर के कोठारी एस.एस. स्वामी तथा यहाँ के भाई-बहन तथा पुजारी कनुभाई दवे सेवा में लगे रहे। – को. नगौतमभाई

**श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा-तीसरा पाटोत्सव संपन्न**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से, पू.पी.पी. स्वामी एवं जेतलपुर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २४-२-११ को श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा का तीसरा पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्रीके वरद् हाथों सम्पन्न हुआ था।

यजमानश्री विष्णुभाई त्रिभोवनदास पटेल परिवारने सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। प्रासंगिक सभा में पू. स्वा. आत्मप्रकाशदाजी, हरिॐ स्वामी, ब्र. पूर्णानन्दजी, स्वा. भक्तिनन्दनदासजी, माधव स्वामी तथा अहमदाबाद मंदिर के योगी स्वामीने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया था। वहाँ के हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये ४ लाख रुपये की सेवा की थी।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को शुभाशीर्वाद दिया था। दूसरे तीन वर्षो के यजमान अभी से निश्चित हो गये थे। बाद में अन्नकूट की आरती का दर्शन करके सभी ने महाप्रसाद ग्रहण किया था। आभारविधिश्री लालभाई पटेलने की थी।

– विश्वप्रकाश स्वामी

**भीमपुरा गाँव में पंचदिनात्मक आदर्श भक्त गाथा पारायण तृतीय पाटोत्सव सम्पन्न**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा से तथा शा. स्वा. पू.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट के महंत) की प्रेरणा से भीमपुरा गाँव में ता. ५-२-११ को प्रथम शाकोत्सव तथा ता. १६-२-११ से ता. २०-२-११ तक आदर्श भक्त गाथा का पंचदिनात्मक यज्ञ का आयोजन किया गया था।

ता. ५-२-११ को भीमपुरा गाँव में प्रथम शाकोत्सव पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. संतो की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था। जिस में ४००० जितने हरिभक्त उपस्थित थे। बाद में तृतीय पाटोत्सव के निमित्त कथा-पारायण का आयोजन किया गया था। जिस के वक्ता स्वा. रामकृष्णदासजी थे। चैतन्य स्वरुपदासजी भी अपनी वाणी का सभी को लाभ दिये थे। जिसके यजमान चौधरी जोइताभाई हाथीभाई रणछोड़दास परिवार थे। कथा प्रसंग के समय समस्त धर्मकुल का आगमन हुआ था। सभी भक्त समाज ने दर्शन का लाभ लिया था। यहाँ के भक्त श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये उत्तम भेंट को दिये थे। सभी की सेवा से पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न हुए थे। सभा का संचालन अभय स्वामीने किया था। – शा. चैतन्यस्वरुपदासजी

**श्रीहरि के पावन पग से पवित्र विहार गाँव में दोनो मंदिर का पाटोत्सव सम्पन्न**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पी.पी. स्वामी नारायणघाट एवं स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पुरुष-महिला दोनो के मंदिरों में वार्षिक पाटोत्सव ता. २३-२-११ को धूमधाम के साथ मनाया गया था।

पाटोत्सव के मुख्य यजमानश्री भीखाभाई केशवलाल पटेल परिवार थे। प.पू. महाराजश्री गाँव में जब पधारे उस समय गाँव के भक्तों धूमधाम के साथ स्वागत किया था। बाद में प.पू. महाराजश्री दोनों मंदिरों में अन्नकूट की आरती उतारने पधारे थे। बाद में चैतन्यस्वरुप स्वामी एवं अभय स्वामीने कथामृत का रसपान कराया था। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। राम स्वामी एवं विश्वस्वरुप स्वामीने भी आशीर्वाद पंठन किया था। सभा का संचालन पी.पी. स्वामीने किया था।

– शा. चैतन्यस्वरुपदासजी

## मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में वसंत पंचमी का उत्सव मनाया गया**

मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में माघ

शुक्ल-५ को वसंत पंचमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । प्रातः ६ बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथों ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक एवं अन्नकूट की आरती की गयी थी । इस प्रसंग पर करीब ५० हजार से भी अधिक हरिभक्त भाग लिये थे । प्रासंगिक सभा में संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने अलौकिक आशीर्वाद दिया था । सभी से श्री स्वामिनारायण म्युझियम को धूमधाम से मनाने की आज्ञा किये थे । बाद में मंदिर के विशाल प्रांगण में संत हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव करके दिव्यानन्द की अनुभूति करवा दिये थे । इस प्रसंग पर महंत स्वा. नारायणप्रसाददासजीने सम्पूर्ण आयोजन किया था ।

– शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी, महंत चराडवा

**लींबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहां के मंदिर में श्री बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का ११ वां पाटोत्सव सुरेन्द्रनगर की सां.यो. कमलाबा, सां. कोकिलाबा, सां. उषाबा, सां. चन्द्रिकाबा के यजमान पद पर स्वा. भक्तवत्सलदास के मार्गदर्शन में मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण श्री रणछोड़भाई अगरशीभाई के यजमान पद पर स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । इसके साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम में संप्रदाय के सुप्रसिद्ध गायक जयेशभाई सोनीने अपने मधुर कंठ से गीत गाकर मुग्धकिया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर से पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी छपैया के महंत ब्र. वासुदेवानन्दजी मूली के महंत स्वामी, प्रभु जीवन स्वामी, चराडवा के महंत स्वामी, शा. हरिप्रकाशदासजी, शा. प्रेमवल्लभदासजी, जेतलपुर से पी.पी. स्वामी इत्यादि संत पधारकर अलौकिक लाभ दिये ते । हजारो भक्तो ने इस दिव्य कथा का लाभ लेकर जीवन को सफल बनाया था ।

इस प्रसंग का आयोजन स्वा. भक्तवत्सलदासजी, तलाटी साहब, श्री नरेन्द्रभाई सोनी, शशीकांतभाई सोनी, किरीटभाई, नरेन्द्रभाई तथा श्रीनरनारायण युवक मंडल ने किया था ।

– शा. वन्दनप्रकाशदास

## विदेश सत्संग समाचार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका)**

यहाँ के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से १५ जनवरी मकरसंक्रांति के दिन समूह महापूजा, धनुर्मास धुन की पूर्णाहुति इत्यादि कार्यक्रम के बाद महंत स्वामी ज्ञानजवीदासजीने मकरसंक्रान्ति का महात्म्य समझाया था । इस पर्व पर दान का विशेष महत्व होता है उदाहरण देकर समझाया था ।

प.पू. बड़े महाराजश्री का पदार्पण जनवरी के अन्तिम ता. में हुआ था । संत हरिभक्तोंने पुष्पहार से प.पू. बड़े महाराजश्री का स्वागत किया था । प.पू. महाराजश्री ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में पधारे थे । महंत स्वामी ज्ञानजीवनजीने वचनामृत का सार तत्व समझाते हुये धर्मकुल ही हमारे गुरु स्थान पर है इस पर बल दिया था । इन्ही के पूजन-अर्चन से हम सभी का कल्याण है सर्व विधसुख-शांति की इच्छावाले सत्संगी महाराजकी आज्ञा में रहकर धर्मकुल के आचार्य में विश्वास रखकर उन्हीं की आज्ञा में रहे यही श्रेयष्कर है । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी हरिभक्तों से प्रतिदिन मंदिर आने के लिये अनुरोधकिया था । विशेष तो म्युझियम के उद्घाटन प्रसंग पर सभी को आने को कहा और समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अंत में ठाकुरजी की सन्ध्या आरती करके सभी को दर्शन का लाभ दिया था ।

**वसंत पंमची शिक्षापत्री जयंती**

यहाँ के मंदिर में माघ शुक्ल वसंत पंचमी को शिक्षापत्री जयंती के शुभ दिन सायं ५-०० बजे ठाकुरजी के समक्ष सभा में महंत स्वामी ज्ञानजीवनदासजीने तथा हरिभक्तोने शिक्षापत्री का पूजन अर्चन करके ठाकुरजी की आरती उतारी थी । महंत स्वामीने सभा में शिक्षापत्री के २१२ श्लोक का समूह में वांचन किया गया था । स्वामी ने सभी को शिक्षापत्री के अनुसार जीवन जीने की बात की थी । सभा में यजमान हरिभक्तों का स्वागत किया गया था । – प्रवीणभाई शाह

**श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर शिक्षापत्री जयंती उत्सव**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के लेस्टर मंदिर में वसंत पंचमी

के उपलक्ष्य में ता. ८-२-११ से ता. १२-२-११ तक श्री शिक्षापत्री भाष्य पंचान्ह पारायण स्वा. राधारमणजीने किया था।

ता. ८-२-११ को शिक्षापत्री जयन्ती तथा वसंत पंचमी के निमित्त सभी हरिभक्तों ने संत हरिभक्तों के साथ शिक्षापत्री पूजन, वक्ताका पूजन, श्री योगेशभाई पटेलने किया था। सभी ने अन्नकूट की आरती का लाभ लिया था। शनिवार को महिला मंडलने महाप्रसाद की सुन्दर व्यवस्था की थी। सभी भक्तजन प्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे।

– किरणभाई भावसार, लेस्टर

**आजभी भगवान स्वामिनारायण का चमत्कार दिखाई देता है सानजोसे (केलोफोर्निया)**

सानजोसे आई.एस.एस.ओ. चेप्टर में ९ से ४ दिसम्बर तक प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। एरपोर्ट प.पू. महाराजश्री का हरिभक्तों दिव्य स्वागत किया था।

यहीं पर पू. महाराजश्री द्वारा एक अद्भुत चमत्कार हुआ था। करीब १० वर्ष से यहाँ के हरिभक्त मंदिर के लिये जमीन चाहते रहे लेकिन संभव नहीं हो पा रहा था। बहुत मुश्किल जैसा हो गया था। फिर भी भक्तों के मन में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री में अपार श्रद्धा थी। इसके लिये यदाकदा भजन-कीर्तन, जप-अनुष्ठान भी करते रहे। संयोग वश प.पू. बड़े महाराजश्री संतो के साथ घूमते हुये एक ऐसी जगह पर पहुँचे, जिसे देखकर महाराजने पसंद कर लिये। आचार्य महाराजश्री को इसकी स्वयं जानकारी भी दे दिये। वे भी खूब प्रसन्न हो गये। परिणाम स्वरुप वहाँ की सरकार ने भी परमीशन जमीन के लिये तत्काल दे दिया। यह एक अद्भुत चमत्कार नहीं है तो और क्या है। जहाँ पर धर्म वंशी होते हैं वहाँ सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाता है। लोस एन्जलस मंदिर के १० वें पाटोत्सव पर प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में सानजोसे के नूतन मंदिर की उद्घोषणा की गयी उस समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से हरि भक्तों ने मंदिर के लिये रुपयों का वरसात कर दिया। कितने हरिभक्त इन्टरनेट तथा टेलीफोन से अपनी भेंट लिखवायी। यह श्रीहरि की गादी के प्रताप का चमत्कार है। धर्मवंशी आचार्य के आशीर्वाद का यह फल है। अशक्य भी शक्य हो जाता है। इसी तरह अनेक चमत्कार देखे हैं। अनुभूत है। सभी इस वात को जानते भी हैं।

– प्रशांत धोलकिया

## अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

**अहमदाबाद :** श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के वयोवृद्ध संत स.गु. स्वामी गोपीनाथदासजी गुरु स.गु. गवैया स्वामी ता. ८-२-२०११ माघ शुक्ल वसंत पंचमी को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है।

**अहमदाबाद :** श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के स.गु. स्वामी कृष्णजीवनदासजी ता. १९-२-२०११ श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है।

**दहेगाम :** श्रीमती मधुबहन परसोत्तमदास काछीया ता. २१-१-२०११ माघ शुक्ल वसंत पंचमी को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

**कालीयाणा (ता. विरमगाँव) :** श्री स्वामिनारायण मासिक के सक्रिय प्रतिनिधितथा श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान श्री डाह्याभाई चेलाभाई बूटीया की धर्मपत्नी अ.सौ. पुरीबहन डाह्याभाई बूटीया माघ कृष्ण-६ ता. २३-२-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

**जेतलपुर :** यहाँ के अग्रगण्य सत्संगी श्री नटवरभाई जीवाभाई पटेल (पूर्व ग्राम प्रधान) ता. २४-२-२०११ माघ शुक्ल वसंत पंचमी को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है।)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

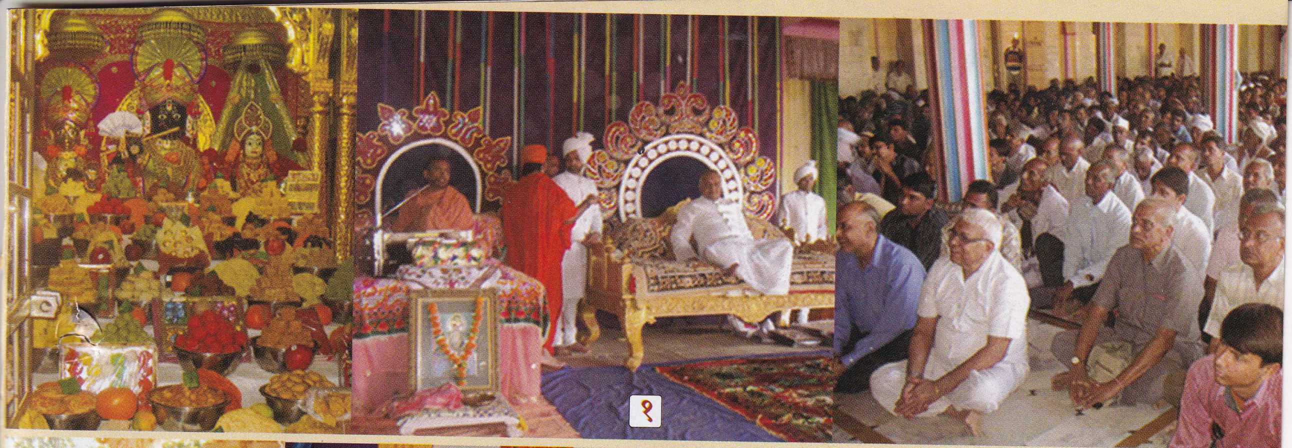
१

२

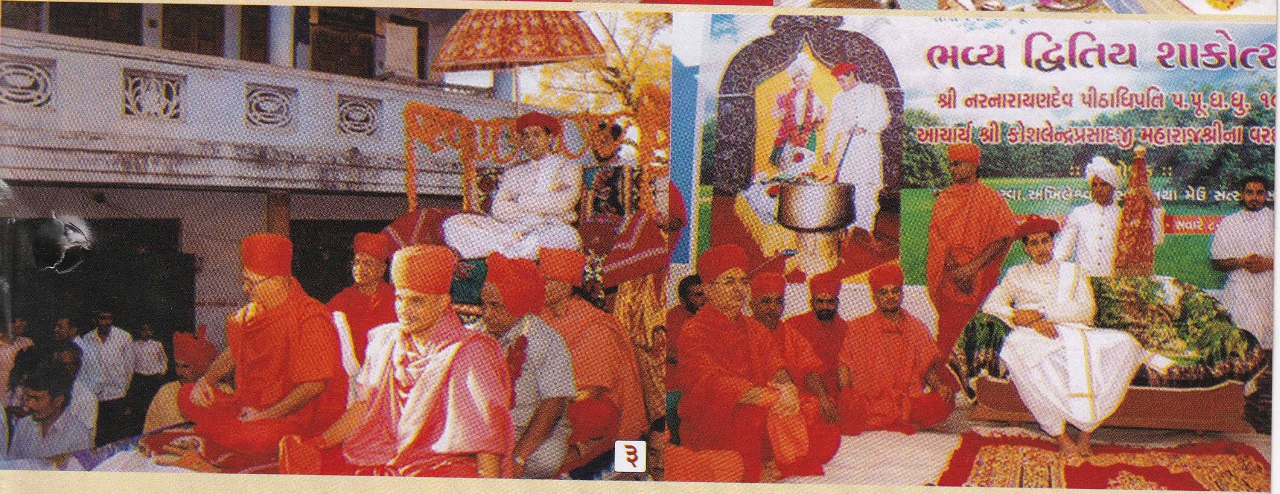

३

( १ ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन एवं सभा में दर्शन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । ( २ ) प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा में हनुमानजी महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री एवं सभा में दर्शन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री एवं कथा करते हुए वक्ता पू. पी.पी. स्वामी एवं यज्ञ की पूर्णाहुति करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । ( ३ ) मेउ श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर शोभा यात्रा में एवं सभा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री साथ में पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. देवप्रकाशदासजी स्वामी, शा. स्वामी अखिलेश्वरदासजी एवं जे.पी. स्वामी ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

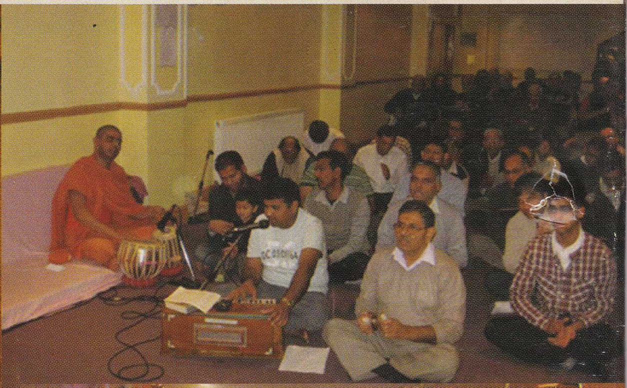

ी स्वामिनारायण मंदिर डिट्रोईट में शाकोत्सव दर्शन, लेस्टर स्वामिनारायण मंदिर में कीर्तन भक्ति करते हुए संत हरिभक्त, श्री
वामिनारायण मंदिर डिट्रोईट में सभा में कथा करते हुए शा. स्वामी सिद्धेश्वरदासजी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री।

raful Kharsani